Chap-5

पंचम अध्याय

साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधों में प्रयुक्त शब्द शक्ति तथा विचलनमूलक भाषिक उपकरण

व्यंग्य निबंधों में शब्द शक्ति का प्रयोग

1. अभिधा शब्द-शक्ति
2. लक्षणा शब्द-शक्ति
3. व्यंजना शब्द-शक्ति

व्यंग्य निबंधों में प्रयुक्त विचलनमूलक भाषिक प्रयोग

1. सहप्रयोगात्मक विचलन

   (i) संज्ञा का संज्ञा के स्तर पर प्रयोग, (ii) संज्ञा के साथ विशेषण का प्रयोग, (iii) संज्ञा का क्रिया के स्तर पर प्रयोग, (iv) क्रिया का क्रिया-विशेषण के स्तर पर प्रयोग
2. साहित्येत्तर शब्दों के रूप में विचलन
3. पद-क्रम विचलन
4. अन्विति के स्तर पर विचलन

पंचम अध्याय

साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधों में प्रयुक्त शब्द शक्ति तथा विचलनमूलक भाषिक उपकरण

व्यंग्य निबंधों में शब्द शक्ति का प्रयोग

शब्द-शक्ति से तात्पर्य

शब्द अक्षरों का वह समूह है, जिसमें कुछ ध्वनित हो। शब्दों में वह शक्ति होती है, जो विभिन्न अर्थों का बोध कराती है। शब्द की सार्थकता उसके अर्थ में ही निहित है। जिस सम्बन्ध या व्यापार के माध्यम से शब्द के निश्चित अर्थ को बोध होता है, उसे 'शब्द-शक्ति' कहते है। शब्द में जितने और जैसे अर्थ होंगे उतनी ही शब्द-शक्तियाँ होगी, अर्थात् शब्द-शक्तियों की संख्या अर्थों के प्रकार पर निर्भर करती हैं।

अर्थ भाषा का सर्वाधिक सूक्ष्म व्यावहारिक तथा महत्त्वपूर्ण पक्ष है। अर्थ के सामर्थ्य से ही भाषा का निर्माण होता है। व्यंग्य भाषा मूलत: अर्थ पर ही आधारित है। अर्थ की उर्वरा शक्ति तथा लचीलेपन के कारण ही व्यंग्यकार विभिन्न प्रकार की अभिव्यंजनाएँ करने में सार्थक होता है। अपनी अभिव्यक्ति को व्यंजित करने के लिए व्यंग्यकार अर्थ के जिस अर्थमूलक उपकरण की सहायता लेता है वह है - शब्द-शक्ति। "साहित्यकार अपनी भाषा को शक्ति-सम्पन्न बनाने के लिए उसे सौन्दर्य सापेक्ष अभीष्ट अर्थ-व्यंजक नया क्लेवर प्रदान करने के निमित्त शब्द की जिस शक्ति से भाषा को सम्प्रेषित करता है, उसे शब्द-शक्ति कहा जाता है।"[1]

शब्द के अर्थ प्रमुख तीन प्रकार से माने गये हैं। आचार्य भिखारीदास ने अपने 'काव्य निर्णय' में इस प्रकार कहा हैं - "पदवाचक अरूलांच्छनिक, व्यंजक तीन विधान्"

अर्थ के तीन प्रकार हैं -

(1) अभिधार्थ या वाच्यार्थ, (2) लक्ष्यार्थ, (3) व्यंग्यार्थ

ये तीन अर्थों के आधार पर ही शब्द के तीन भेद किये हैं।

(1) वाचक, (2) लक्षण, (3) व्यंजक

वाचक शब्द से वाच्यार्थ, लक्षण शब्द से लक्ष्यार्थ और व्यंजक शब्द से व्यंग्यार्थ का बोध होता है। इस प्रकार इन शब्दों के अर्थ का बोध करानेवाली

तीन शक्तियाँ हैं।

(1) अभिधा, (2) लक्षणा, (3) व्यंजना

शब्द-शक्ति व्यंग्य भाषा का अर्थमूलक उपकरण है। साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य-निबंध साहित्य में इसका प्रयोग मिलता है।

1. अभिधा शब्द-शक्ति

प्रसिद्ध तथा मुख्य अर्थ का बोध करानेवाली शब्द-शक्ति को अभिधा कहते है। अभिधा शब्द-शक्ति रूढ़, यौगिक तथा योग रूढ़ शब्दों को ग्रहण करती है। इसके द्वारा सीधा साक्षात् अर्थ का बोध होता है।यह समाज में प्रचलित स्वाभाविक शब्द-शक्ति है जिसका प्रयोग प्रतिदिन व्यवहार में होता है। हिन्दी व्यंग्य निबंध में इसका प्रयोग व्यंग्य की प्रस्तुति के लिए किया गया है। उदाहरणार्थ--

"वह माता! दुनिया में भाषा अभिव्यक्ति के काम आती है। इस देश में भाषा दंगे के काम आती है।"[2]

'भाषा' मानवीय अभिव्यक्ति का साधन है। किन्तु यहाँ भाषा प्रांतीय झगड़े कराने वाली चीज़ मानी गयी है।

"देव, धनानन्द, मतिराम और जाने किन किन की रोमांटिक आत्माएँ मेरे भीतर उमड़ रही हैं। तत्कालिक विषयों में मेरी रूचि समाप्त हो रही है और मेरा झुकाव शाश्वत विषय की ओर हो रहा है। परायी अपनी-सी लगने लगी है। विश्व-बंधुत्व, विश्व-बहनत्व गया भाड़ में, कुछ-कुछ विश्व प्रेयसित्व उभर रहा है। रीतिकाल जो न करवाये।"[3]

'रीतिकाल' शब्द हिन्दी साहित्य के इतिहास में श्रृंगारिक तथा दरबारी साहित्य के लिए प्रचलित है। यहाँ श्रृंगारिकता के भाव के लिए 'रीतिकाल' शब्द अभिव्यंजित किया है।

"अब सब मलाई खा रहे हैं, तो वे भी खा रहे हैं, पर चाटने का अंदाज वही है, जो संधर्षकाल में था। चेहरे पर भाव यही रहता है कि अन्य कुछ उपलब्ध न हो पाने के कारण मलाई खा रहे हैं।"[4]

नेताओं ने आजादी प्राप्त करनें के लिए जो संधर्ष किया है, आजादी के पश्चात उनके पुत्र ब्याज सहित उसकी कीमत वसूल करने में लगे हैं। इसी बात को यहाँ व्यंजित किया गया है।

"पर्चा बनाने वालों, परीक्षा के निरीक्षकों, अधीक्षकों, कापी जाँचनेवालों, नम्बर जोड़नेवालों, जोड़ की चेकिंग करनेवालों यानी परीक्षा से पैसे पैदा करने वालों की संख्या भी लाखों में है और अगर परीक्षाएँ खत्म हो गई तो उनकी जीविका का एक साधन भी खत्म हो जाएगा, यानी आज की परीक्षाएँ छात्रों के लिए भले ही बेकार हो, मास्टरों के लिए बड़ी काम की है और सारी की सारी शिक्षा भले ही खत्म हो जाए, परीक्षाएँ नहीं खत्म की जा सकती।"[5]

यहाँ भारतीय परीक्षा प्रणाली की कमजोरियों तथा शिक्षण क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है।

"भारत में बढ़ती हुई ब्लड-प्रेशर की बीमारी इन खबरों का ही दुष्परिणाम हो सकती है। जहां इस प्रकार की खबरें कुछ लोगों के लिए हानिकारक सिद्ध हुई हैं, वहां इनका एक दूसरा पहलू भी है। कहा जाता है कि जिन लागों का मेदा सख़्त होता है , उनको इस प्रकार की डरावनी खबरें पढ़कर शौच जाने में सुविधा होती है। उनके लिए तो अखबार केस्ट्रोफीन का काम करता है। अखबार का अखबार और दवाई की दवाई।"[6]

समाचार पत्र सिर्फ समाचार पढ़ने का साधन न होकर के उसे हाज़में की दवाई के रूप में व्यंजित किया है।

"खिड़की के अंदर बैठे टिकट बाबू को कोई जल्दी नहीं थी। कोई गाड़ी पकड़ पाएगा या नहीं इसकी माया उन्हें नहीं व्यापती थी।"[7]

यहाँ 'माया' शब्द द्वारा टिकट बाबू के उदासीन भाव, उनकी उत्तरदायित्त्वहीन भावना तथा कछुआ चाल से काम करने की प्रवृत्ति जैसी विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है।

"जनता भी भोली है, गांधी के नाम से बहका दी जाती है और वह है कि बहक जाती है। जहां कोई टोटका नहीं चलता, वहां गांधीजी फिट कर दिए जाते हैं। देश को लूटने के लिए ट्रंप कार्ड, गांधीजी न हुए ताश का जोकर हो गए, जहां चाहा फिट कर दिया और माल अपने गल्ले में।"[8]

यहाँ नेताओं द्वारा 'गांधीजी' को ढाल बनाकर अपना कार्य सिद्ध करने की वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"सफल गुंडे लीड़र कहलाते हैं और असफल लीड़र गुंड़े कहलाते हैं। हर लीड़र जनता की खाल उधेड़ने के लिए बैठा है।"[9]

देश का नेता राजनीति का नायक होता है। किन्तु आज के नेता के धूर्त

आचरण ने उसे गुंडा बनाया है। यहाँ नेता की चरित्रिक विशेषता पर व्यंग्य किया गया है।

"बाप रे बाप, हिन्दूस्तानी है! घुसने भर मत देना इसको, नहीं चार दिन में तुमको भी अपने ही जैसा कंगाल कर देगा और तुम भी कटोरा लेकर गली-गली भीख माँगते दिखायी दोगे? भगाओ सालों को! मोटा-सा एक डंडा रख लो पास में!"[10]

यहाँ हिन्दूस्तान में पनप रही गरीबी, रिश्वत तथा भ्रष्टाचार जैसी विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है।

"कैसे नालायक लोगों को पुलिस में भरती कर दिया है। ये लोग पुलिस में होकर भी अपना पेट नहीं भर सकते। इतने अपराध होते हैं नगर में, एक-एक से दस पैसे भी लें तो लाखपति हो जाएं। और ये कहते हैं इनका पेट नहीं भरता।"[11]

पुलिस लोगों की सुरक्षा तथा भ्रष्टाचार को नाबूद करने के लिए होती है। किन्तु खुद पुलिस ही रिश्वत लेने लगी है। पुलिस-तंत्र में फैसी इस विसंगति को यहाँ व्यंजित किया गया है।

"नौकरशाह फाइलों में उलझा बैठा था। उसे देश के विकास की बहुत सी चिंता थी। उसने कहा - "अगले पन्द्रह सालों में ठीक हो जायेगा। यह सब कुछ विदेशियों के कारण हुआ है।"[12]

यहाँ प्रशासनिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है।

"गांधीजी की बकरी भी तो टू-इन-वन हो गई है। बकरी बनकर दूध देने का नाटक कर रही है तथा दीमक बनकर देश को चाट रही है और भेड़िया बनकर खून पी रही है।"[13]

'बकरी' दूध देनेवाला पशु है। किन्तु यहाँ राजनीति में व्याप्त विसंगतियों को व्यंजित करने के लिए इसका प्रयोग हुआ है।

"आजदी सिर्फ वह ही नहीं होती जो बड़े-बड़े समारोहों में बैंड़-बाजों की धुन पर सजाई जाती है। आजादी वह भी होती है जो भूख बनकर आंतों में रेंगती है और ठण्डक बनकर अधनंगे जिस्मों को ठिठुराती रहती है।"[14]

देश में व्याप्त गरीबी की समस्यां पर व्यंग्य किया गया है।

"असल में सारे मजे दिल्ली में सरकारी खर्चे पर आकर मरने में हैं। बाहर मरने पर न उतनी श्रद्धांजलियाँ मिल सकती हैं और न विज्ञापित हो सकती हैं। रेडियो वाले तो समाचार दर्शन में उसे ला ही नहीं सकते। राष्ट्रनेताओं की सुन्दर

फूल मालाओं को पाने और समाचार-दर्शन में स्थान पाने के लिए जिन्दा शव को दिल्ली आना ही पड़ेगा।"[15]

यहाँ नेता के झूठे प्रदर्शन तथा विज्ञापन की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"उस दिन एक मित्र आए और बौले, "भैया, लड़की सयानी हो गई है, उसके हाथ पीले करने हैं, लड़की बी.ए. पास है, रंग गौरा है, घर के काम में दक्ष है, कद में ठिगनी है, कद बढ़ नहीं रहा, लड़के वाले आते हैं और कद के कारण ही लौट जाते हैं।" मैंने कहा, "यार ज़रा-सी बात के लिए इतने परेशान हो, लड़की का नाम महँगाई रख लो। जल्दी-जल्दी उसका कद बढ़ता चला जाएगा।"[16]

"सिर में टोपी पहनना अब उन्होंने छोड़ दिया है। उनका ख्याल कि टोपी से बड़ी परेशानी होती है। वर्षों तक वह टोपियाँ बदलते रहे हैं - कभी उन्होंने लाल टोपी पहिनी, कभी केसरिया और कभी सफेद। वह कहते हैं - 'टोपी से आदमी पहचाना जाता है। टोपी बदलने पर लोग ऊंगली उठाते हैं इसलिए हमने टोपी पहनना ही छोड़ दिया।"[17]

पहले टोपी पहनना दलीय निष्ठा की पहचान मानी जाती थी। किन्तु आज के नेताओं में अब ऐसी निष्ठा नहीं रही है। इस बात को यहाँ व्यंजित किया गया है।

"तो मित्रो, पार्टी दफ्तर में चरखा तलाशा जा रहा है। वहाँ गांधीजी को भी खोजा जा रहा है। इस एक अर्थ में दफ्तर तथा देश की स्थिति एक सी है। यहाँ भी गाँधी को खोजने का नाटक चल रहा है, वर्षों से।"[18]

भारत के राष्ट्रपिता गांधीजी को आज लोग नहीं पहचानते। यहाँ इसी बात को व्यंजित किया गया है।

"अनार को इतना सस्ता मत बनाओ कि एक अध्यापक से उसकी तुलना होने लगे। अनार का पर्याय ही बनाना है और अफसर को बनाओ। दोनों के चेहरों पर लालाई रहती है तथा दोनों आसानी से उपलब्ध नहीं होते। अत: अ से अफसर ही ज्यादा उपयुक्त रहेगा।"[19]

अनार और अफसर की तुलना की है। अनार बाजार में आसानी से उपलब्ध नहीं होता है। उसी तरह अफसर अपने कार्यालय में जरूरत पड़ने के समय पर नहीं मिलता है। इस बात पर यहाँ व्यंग्य किया गया है।

"मध्यमवर्गीय का झोला मध्यमवर्गीय होता है। न ज्यादा बड़ा न ज्यादा छोटा। ठीक इतना बड़ा कि इसमें खुद की कमाई से खरीदी गयी दो किलो सब्जी भी न अटे (समाये)। पर यदि चोरी-छिपे सिगड़ी जलाने के लिए मुफ्त का बुरादा

मिल जाय, तो चाहे पसेरी दो पसेरी भर लो।"[20]

यहाँ मध्यम वर्ग में व्याप्त समस्याओं को उजागर किया है।

अभिधा शब्द-शक्ति में अर्थ रूढ़ होता है। व्यंग्य साहित्य में इसका प्रयोग वहाँ हुआ है जहाँ सपाट बयानी, सीधा या प्रत्यक्ष व्यंग्य करना हो। व्यंग्यकार साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंध साहित्य में अभिधा शक्ति द्वारा व्यंग्य करने में सफल हुआ है।

लक्षणा शब्द-शक्ति

यह आरोपित शब्द-शक्ति है जिसका व्यंग्य साहित्य में भी अधिकता से प्रयोग मिलता है। काव्यप्रकाश में लिखा है कि

मुख्यार्थ बाधे तघ्योगे रूढि तोडर्थ प्रयोजनान्।
अन्योडर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपिता क्रिया।।

अर्थात मुख्यार्थ में बाधा होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन द्वारा जिस शव्द-शक्ति से अन्यार्थ की प्रतीति होती हो उसे लक्षणा कहते हैं। लक्षणा शब्द-शक्ति में तीन बातें प्रमुख होती हैं।

1) शब्द के मुख्यार्थ की बांधा
2) मुख्य अर्थ से अतिरिक्त किसी अन्यार्थ का ज्ञान
3) रूढि या प्रयोजन के आधार पर अन्यार्थ का जानना।

लक्षणा के दो भेद हैं।

(1) रूढि लक्षणा (2) प्रयोजनवती लक्षणा

1) रूढ़ि लक्षणा

जहाँ रूढ़ि के कारण मुख्यार्थ को छोड़कर उससे सम्बद्ध अन्यार्थ को ग्रहण किया जाता है वहा रूढ़ि लक्षणा होती है। इसके अंतर्गत मुहावरे और कहावते आते हैं जिसमें मुख्यार्थ से बाधिक अन्यार्थ से अर्थ ग्रहण किया जाता है।

2) प्रयोजनवती लक्षणा

प्रयोजनवती लक्षणा में मुख्यार्थ में होने पर किसी प्रयोजन के आधार पर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है।

इसके दो भेद किये गये है। जैसे (i) गौणी लक्षणा (ii) शुद्ध लक्षणा

जहाँ सादृश्य के अतिरिक्त किसी दूसरे सम्बन्ध से लक्ष्यार्थ की प्राप्ति हो वहाँ शुद्ध लक्षणा होती है।

जहाँ समान गुण-धर्म के आधार पर लक्ष्यार्थ प्राप्त किया जाता है वहाँ गौणी लक्षणा होती है।

इन दोनों के पुनः दो-दो भेद किये गये हैं - (i) उपादान लक्षणा (ii) लक्षण लक्षणा

जहाँ पर मुख्यार्थ बना रहे और अपनी कार्य-पूर्ति के लिए अन्यार्थ को भी ग्रहण करे वहाँ उपादान लक्षणा होती है।

जहाँ मुख्यार्थ अपने को छोड़कर केवल लक्ष्यार्थ को सूचित करे, वहाँ लक्षण लक्षणा होती है।

इसी तरह गौणी और शुद्धा के अन्तर्गत प्रत्येक प्रकार के सारोपा और साध्यवसाना लक्षणा जैसे उपभेद भी हैं।

जब उपमेय पर उपमान का आरोप हो तो उसमें उपमेय और उपमान दोनों अपने आप आ जाते हैं। ऐसी स्थिति में वहाँ सारोपा लक्षणा होती है।

जहाँ आरोप का विषय (उपमेय) का अवसान उपमान द्वारा हो जाता है और मात्र उपमान का ही उल्लेख किया जाता है वहाँ साध्यवसाना लक्षणा होती है।

हिन्दी व्यंग्य निबंधों में लक्षणा शब्द शक्ति द्वारा अनेक स्थानों पर व्यंग्य किया गया है। इसके कुछ उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है। जैसे -

"उस एकलव्य ने बिना तर्क गुरू को अंगूठा काटकर दे दिया, इस एकलव्य ने गुरू को अंगूठा दिखाया है।"[21]

यहाँ मुख्यार्थ की बाधा हाने पर रूढ़ि द्वारा अन्यार्थ को ग्रहण किया गया है। 'अंगूठा दिखाया' मुहावरा द्वारा विसंगति को व्यंजित किया गया है।

"देश की स्वतंत्र्यता की लड़ाई में जिनके सिर टूट गए, उनके वच्चें यतीमों के समान आलू-छोले बेचते हैं और जिनके सिर गिर गए यानी झूक गए, उनके बच्चे नोट बनाने की मशीने लिए फिरते हैं। तुड़वाना मूर्खता है। झुकाना बुद्धिमता है। हमारे ऋषिमुनि सिर झुकाते थे, सिर मूर्ति से मारकर तुड़वाते नहीं थे।"[22]

यहाँ 'जिनके' सिर टूट गए' का लक्ष्यार्थ है - युद्ध में शहीद हो गए या देशभक्त और वीर देश पर कुर्बान हो गये हो ऐसा व्यक्ति। ऐसे देशभक्त के बच्चे आज बेसहारा और साधनहीन स्थिति में है। उनके परिवार की आर्थिक परिस्थिति अच्छी नहीं है। 'जिनके सिर गिर गए' का लक्ष्यार्थ है - जिसने सिर झुकाकर

आधीनता स्वीकार कर ली हो वो। अर्थात् ढ़ोंगी और लम्पट लोग। ऐसे व्यक्ति के बच्चें आज साधन सम्पन्न और सत्ताधीश है। यहाँ लक्ष्यार्थ द्वारा मनुष्य की चारित्रगत विशेषता को व्यंजित किया गया है।

"अफसर को तो नाहक ही बदनाम किया जाता है। अफसर तो प्रशासन की रीढ़ की हड्डी होता है। और रीढ़ की हड्डी भला कैसे सूखा खाएगी। रीढ़ की हड्डी को धारण करने वाला अवश्य भूसा खाएगा।"[23]

"कुर्सी मिलते ही अच्छे-अच्छे चुकन्दर सिकन्दर बन जाते है।"[24]

"तुम तो कहते थे कि कचहरी में आदमी मूंड लिया जाता है मगर इसके साथ में तो उस्तरा नहीं हैं।"[25]

'मूंड लिया जाने' का अर्थ सर मुड़वाना नहीं है। किन्तु कचहरी में आदमी के पास पैसे वसूलने की किंमत के अर्थ में लिया गया है। यहाँ 'मूंड लिया जाने' में लक्ष्यार्थ रूढ़ हो गया है।

"जिस साल आध्यापक का कोई पेपर होता है उस साल छात्र-प्रेम में ऐसा ज्वार आता है कि जिसका भाटे से कोई सम्बन्ध नहीं होता।"[26]

"भारत का वोटर 'बछिया के ताऊ' होता है।"[27]

"बेटे के मुखश्री से ऐसे पाप बचन सुनकर मेरी आत्मा में मज़ीरा बज़ने लगा। जी में आया कि आपका पूरा घर पाप संगीतके हवाले करके और सिर्फ एक ढोलक गले में डालकर में हिमालय की तरफ निकल जाऊँ। मैं ढहरा मूँग की पतली दाल खाने वाला। भला पाप कैसे झेल पाऊँगा?"[28]

"मुँडे हुए सर की राजनीति तुम नहीं जानते हो महाराज, हमें अन्दर से समाचार मिला था कि जो जो, तिरूपति अधिवेशन में अपना सर मुड़वायेगा, उसकी एक सूची बनेगी और भविष्य में पदों का बँटवारा सर मुड़ाये हुए निष्ठावानों को दिया जायेगा। वहाँ तो गंजे कार्यकर्ता तक सर पर अस्तरा फिरवा रहे थे।"[29]

ऊपर्युक्त उदाहरणों में रूढ़ि लक्षणा है। मुख्यार्थ में बाधा होने से लक्ष्यार्थ द्वारा लक्षित विसंगतियों पर व्यंग्य के लिए व्यंग्यकार ने मुहावरों का परिवर्तन भी किया है। लक्षणा शब्द-शक्ति के अन्य उदाहरण देखिए -

"दुनिया में बहुत पुराने विश्वविद्यालय होंगे, पर वहाँ भी एक छात्र के पीछे एक पुलिसमैन अभी तक नहीं हो पाया । शासन को तो इस प्रगति का श्रेय है ही, आप लोगों को भी कुछ श्रेय है।"[30]

यहाँ 'प्रगति' शब्द अवनति का सूचक है। छात्रों के पीछे पुलिस का होना

अप्रगति कही जाती है। यहाँ सारोपा शुद्धा लक्षणा द्वारा अन्यार्थ को ग्रहण किया गया है।

"स्वतंत्र्यता प्राप्ति से पूर्व देश की कोंग्रेस-पार्टी की जेब में सिवाय कष्ट, संघर्ष और त्याग के कुछ नहीं था। उस समय जेबकतरे कांग्रेस की ओर से उदासीन रहे। जैसे ही देश स्वतंत्र हुआ और कांग्रेस सत्तारूढ़ हुई कि भ्रष्ट, निकम्मे और दुश्चरित्र जेबकतरे कांग्रेस का बिल्ला लगाकर 'भगत-बिल्ली' की भांति कांग्रेस में घुस गये। इन तस्करों ने सर्वप्रथम कांग्रेस की प्रतिमा चुराई, फिर ईमान चुराया, इन जेबकतरों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई और निष्ठावान कांग्रेसी नेताओं की समाप्ति हो गयी, उनके साथ ही त्याग, बलिदान और आस्था का भी अन्त हो गया।"[31]

यहाँ कांग्रेस पार्टी में हो रही भीतरी खींचतान, टिकिट के झगड़े, चापलूसी नेताओं की सत्ता-लोलुपता आदि पर व्यंग्य किया गया है।

"मेरे एक मित्र जो अर्थशास्त्र पर लेख आदि लिखते हैं, का कहना कुछ और है। बता रहे थे कि देश मे कागज की कमी ने समाजवाद के उत्पादन को बहुत धक्का पहुँचाया है। क्योंकि कुल मिलाकर सारा समाजवाद कागज़ पर होता था। कागज़ की कमी आयी, तो सारा उत्पादन ठप्प हो गया। पोजीशन ठीक होते ही, फिर समाजवाद बाज़ार में आ जाएगा।"[32]

देश में समाजवाद की क्रांति आयी है, वह सिर्फ कागज़ पर ही होती है। अर्थात् साहित्य और समाचार-पत्रों आदि तक ही सिमित है। इसी बात को व्यंजिय किया गया है।

"आप जाइए, आप तीन कौड़ी के लेखक हैं, अमेरिका में होते तो मोचीगिरी करते।"[33]

"महात्माजी तो मर कर भी अमर हो गए थे, लेकिन अब उनके चैले महात्माजी के नाम की रामनामी चादर ओढ़कर अपनी गरीबी की ठंडी दूर कर लेना चाहते थे।"[34]

यहाँ महात्माजी के नाम और गरीबी पर रामनामी चादर तथा गरीबी की ठंडी का आरोप किया है। इस संपूर्ण विधान में मुख्यार्थ बाधक है।

"हमें वह ऊंची उपाधि नहीं गांधारी लगी, अंधे शासक से ब्याही जिसने पति की निष्ठा में आंखों पर पट्टी बांध ली है। तभी हम कहें कि इधर दुर्योधन एण्ड कम्पनी की इतनी भरमार कैसे है।"[35]

यहाँ ऊंची उपाधियों के प्रति छात्रों की विरक्ति और छात्रों के आचरण की समीक्षा की गई है।

"विद्यार्थी वह गधा है, जिसकी पीठ पर चढ़कर हेड़ ऑफ द डिपार्टमेन्ट (कुत्ता) प्रकाशक (बिल्ली) तथा मुर्गा (लेखक) बांग देते हैं और मुफ़्त का माल जी भर छकते हैं।"[36]

शैक्षणिक तथा साहित्य क्षेत्र में शोषण की श्रृंखला बताकर आदमी पर जानवरों की उपमा दी है।

"भिखारी है कि उसे भीख माँगने से फुरसत नहीं कि एक क्षण को सुस्ता तो ले। आजादी के फौरन बाद से लगातार माँग रहा है - बसस्टैंड का भिखारी - मेरा देश।"[37]

यहाँ देश पर बसस्टैंड के भिखारी का आरोप किया गया है। आजादी के पश्चात देश कर्ज के लिए अन्य देशों से (भीख) सहाय माँगता है। इसी बात को व्यंजित किया है।

"जिस समय मैंने मुख्यमंत्री का दिमाग खोला, क्या बताऊँ सारा कमरा एकदम बदबू से भर गया। इतनी बदबू राजनेताओं के दिमाग में कहाँ से पैदा हो जाती है? क्या यही बदबू इन्हें इतनी ऊँची कुर्सी तक पहुँचा देती है।"[38]

"हमें अपने तिरंगे झण्डे पर नाज है, पर लोगों की भावनाओं की जुगलबन्दी इसके रंगो में भी नज़र आती है। जो आम हैं और देश का भार अपने कंधों पर ढो रहा हैं, वे केसरिया बाना पहने हर कदम पर शहीद होते रहते हैं। हरियाली को कुछ विशिष्ट वर्गों के लोग बड़े इत्मीनान से चर रहे हैं।"[39]

भारत के त्रीरंगी झंडे की तरह यहाँ बसनेवाली प्रजा को भी तीन वर्गों में बाँटा है। यहाँ मुख्यार्थ बाधित है। समान गुण-धर्म के आधार पर लक्ष्यार्थ प्राप्त किया गया है। अर्थात यहाँ सारोपा गौणी लक्षणा है।

"तहसीलदार का चापलूसी वधू के पिता को समझाता कि साहब को कुछ दे दो.... साहब अच्छे हैं..... तुम्हारी लड़की को जल्दी निपटा देंगे। आजकल बिना लिये-दिये कुछ भी नहीं होता। साहब को भी ऊपर बालों को महीना देना पड़ता है।"[40]

शुद्ध लक्षण लक्षणा द्वारा मुख्यार्थ को छोड़ कर लक्ष्यार्थ से दहेज तथा रिश्वत जैसी समस्या पर व्यंग्य किया गया है।

"लल्लू की पगड़ी बंधवाकार हनीमून के नशे में चूर सांसारिकता के जाल में

धड़ल्ले से बाजे-गाजे के साथ प्रवेश करते हैं। पगड़ी बांध कर इधर-उधर चरने की बाजाय लल्लूजी को एक ही जगह घास चरने की सामाजिक पाबंदी होती है।"[41]

नशा शराब का होता है, हनीमून का नहीं। जाल तंतुओ का होता है, संसार का नहीं तथा घास जानवर चरता है मनुष्य नहीं। यहाँ मुख्यार्थ को छोड़ कर अन्यार्थ से अर्थ ग्रहण करना पड़ेगा। सांसारिकता जाल को विवाह, एक ही जगह घास चरने की पाबंदी यानी इक पत्नीत्त्व या वैवाहिक बन्धन जैसे अर्थ को शुद्ध लक्षण लक्षणा द्वारा व्यंजित किया गया है।

"जनता के सैंवकों ने थ्रू प्रापर चैनल रूपया खाया।"[42]

" उपदेश साफ है। इस तरह की राजनीति में तुम उनका सामना नहीं कर सकते। हो सके तो हवाई जहाज टूटने के पहले ही पैरासूट से नीचे उतर जाओ। भाग सको तो आधे रस्ते से ही भाग जाओ। वह चारागाह उन्ही के लिए छोड़ दो।"[43]

यहाँ साध्यवसाना उपादान लक्षणा द्वारा 'चारागाह' से लक्ष्यार्थ है राजनीति। राजनीतिक विसंगति पर व्यंग्य किया गया है।

"प्रतिवर्ष तरक्की के स्थान पर पंडितजी का वेतन कम कर दिया जाता था। वस्तुत: पाठशाला की आर्थिक अवस्था दिन-प्रतिदिन पतली होती जाती थी, जिसके फलस्वरूप पंडितजी के वेतन पर क्रमश कुठराघात होता रहता था।"[44]

'पाठशाला की आर्थिक अवस्था दिन-पतिदिन पतली होने' से तात्पर्य है कि पाठशाला की आर्थिक व्यवस्था बिगड़ती जाती है। 'वेतन पर क्रमश: कुठराघात' से तात्पर्य है कि वेतन क्रमश: कम होता जा रहा है। यहाँ मुख्यार्थ बाधित होकर लक्ष्यार्थ से अर्थ व्यंजित हुआ है।

"यों हमारी आँख का ऑफिस बिना सूरज चपरासी के आये नहीं खुलता परन्तु हमारे लिखने के इरादे सीमेन्टेड थे, अत: रात ही घड़ी में चाभी भर दी थी। कर्कशा पत्नी की भाँति उसने ठीक समय पर हमारे कान खा लिये।"[45]

यहाँ लक्षण लक्षणा द्वारा अर्थ व्यंजित किया गया है।

"कार्यालयों में काम करने वाले भगवान से कम नहीं होते। जब मनोकामना पूरी हो गई तो भक्तों को प्रसाद बांटने में क्या संकोच! उनका काम हुआ, इनका प्रसाद हुआ अथवा दाम हुआ! कई बार काम हो जाने के पूर्व भी चढ़ाव मांग लिया जाता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पूर्व के चढ़ावे के बाद काम नहीं होता। यह जरूरी तो नहीं कि हर बार काम हो ही जाए, किंतु प्रसाद प्राप्तार्थी माला जपते

रहते हैं।

प्रसाद तथा चढ़ावा मांगने से लक्ष्यार्थ है - रिश्वत। कार्यालयों में बिना रिश्वत आम जनता का कार्य रूका पड़ा रहता है। इसी बात को यहाँ व्यंजित किया गया है।

ऊपरोक्त सभी उदाहरणों में लक्षणा शब्द-शक्ति द्वारा व्यंग्य को प्रस्तुत किया है। व्यंग्यकारों ने नविन अर्थ को सम्प्रेषित करने के लिए इसका प्रयोग किया है। भावावेश तथा आक्रोश की व्यंजना वाच्यार्थ से अधिक लक्ष्यार्थ द्वारा होती है।

3) व्यंजना शब्द-शक्ति

अभिधा तथा लक्षणा शब्द-शक्ति अपने अर्थ का बोध कराकर विरक्त हो जाती है, तब जिस शब्द-शक्ति से अर्थ का ज्ञात होता है उसे व्यंजना शब्द-शक्ति कहते है। अर्थात् व्यंग्यार्थ का बोध करानेवाली शब्द-शक्ति को हम व्यंजना कहेंगे।

सूधौ अर्थ जु वचन कौं, तेहि तजि और बैन।
समुझि परै तेहि कहत हैं, सरित व्यंजना ऐनि।।

(सीधे अर्थ को छोड़कर जिससे अन्य अर्थ ग्रहण किया जाय उसे व्यंजना कहते हैं।)

व्यंग्यार्थ को ग्रहण करने के लिए किसी संबंध की आवश्यकता नहीं है। व्यंजना अर्थ पर आधारित है। लक्षणा और अभिधा शब्द पर आधारित है। इसमें विपरित अर्थ भी लिया जा सकता है। व्यंग्यार्थ में एक शब्द से अनेक अर्थ ग्रहण किये जाते है। व्यंजना शक्ति उत्तम कोटि की शब्द-शक्ति मानी गई है। व्यंग्यार्थ को ग्रहण करने तथा समझने के लिए बौद्धिक प्रतिभा की जरूर होती है। नगेन्द्र का मानना है कि - "व्यंजना शब्द की वह शक्ति है। जो कल्पना (चित्र-विधायिनी शक्ति) को उकसाए..... चित्र-भाषा का क्लेवर सांकेतिक और प्रतीकात्मक शब्दों से बनता है और ये दोनों व्यंजना की विभूतियाँ है।"[47] व्यंजना शब्द-शक्ति के दो भेद हैं (i) शाब्दी व्यंजना (ii) आर्थी व्यंजना

1) शाब्दी व्यंजना

यह उस जगह होती है जहाँ व्यंग्यार्थ वाले शब्द को हटाकर दूसरा पर्यायवाची शब्द रखने पर भी अर्थ न निकले। इसके दो उपभेद हैं।

(i) <u>अभिधामूलक शाब्दी व्यंजना</u>

जब अभिधा शब्द शक्ति द्वारा एक अर्थ निश्चित हो जाने पर अनेकार्थक शब्दों का अन्य अर्थ होता हो, वहाँ अभिधामूलक शाब्दी व्यंजना होती है।

(ii) लक्षणामूलक शाब्दी व्यंजना

इसमें लक्षणा में व्यंजित होने वाले रूप ही आते हैं। जितने प्रकार की लक्षणा शब्द-शक्ति होती है, उसके रूप भी उतने ही होते हैं। अतः ऐसा अर्थ व्यंजित होने पर उसके कारण यहाँ लक्षणामूलक शाब्दी व्यंजना होती है।

2) आर्थी व्यंजना

शब्दों के अर्थ विभिन्न व्यक्तियों के संदर्भ में विभिन्न रूप से लगते हैं। अतः व्यंग्यार्थ उस शब्द के पर्याय का प्रयोग करने पर भी बना रहे, वहां आर्थी व्यंजना होती है।

व्यंग्य निबन्ध की भाषा में अभिधा और लक्षणा के साथ व्यंजनात्मक प्रयोगों की विशिष्ट उपयोगिता होती है। व्यंजना द्वारा निर्देशित अर्थ ही व्यंग्य कहलाता है। व्यंग्य निबंधों की भाषा का शैलीगत अध्ययन के लिए व्यंजना शब्द शक्ति उपयोगी है। साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंध में इसके उदाहरण मिलते हैं। जैसे -

"खुद को निःस्वार्थ सेवक कहते हैं। पिछले दिनों दो हाउसिंग सोसायटीज दुबोयी और मकान खड़े किए।"[48]

महास्वार्थी तथा लोभी नेताओं तथा अफसरों के लिए 'निःस्वार्थ सेवक' शब्द का प्रयोग किया गया है जो विपरित अर्थ में लिया गया है।

"..... उज्जवल है देश का भविष्य। कौन कहता है, हम प्रगति नहीं कर रहे?"[49]

'उज्जवल' तथा 'प्रगति' शब्दों के प्रचलित अर्थ यहाँ पर प्रयुक्त नहीं हुए है। किन्तु यह 'अवनति' के अर्थ में संप्रेषित किया है।

"एक बार सरोजिनी नायडु ने एक विदेशी पत्रकार से कहा था - 'यू डू नाट नो हाऊ मच इट कास्ट्म अस टु कीप गाँधीजी पूअर!' यानी तुम नहीं जानते कि गाँधीजी को गरीब रखने के लिए हमें कितना खर्च करना पड़ता है। जनता की जनता के द्वारा, जनता के लिए सरकार कैसे अपने ही लिए हो जाती है, यह अब्राहम लिंकन को नहीं मालूम था।"[50]

" मेरी सलाह है कि वे (विद्यार्थी) कुछ रचनात्मक कार्य करें। रेल की पटरी उखाड़ना, सरकारी बसें जलाना, डाकखाने लूटना, पुलिस के साथ हाथापाई करना

– यही सभी कुछ रचनात्मक कार्यों की परिधि में आता है। बड़ी बात यह है कि इन क्षेत्रों में अभी इतना काम होने को पड़ा है कि आपके बेकार-रहने का प्रश्न नहीं उठता।"[51]

यहाँ 'रचनात्मक कार्य' शब्द विपरित अर्थ में लिया गया है। मामूली सी बात पर भड़क उठना, बसें जलाना, रास्ता रोको आदि रचनात्मक कार्य गिनाये गये हैं।

"परवाने शमा पर मरना फिर शुरू कर देते हैं और शमा जो है वह बिजली विभाग की कृपा के कारण हर पाँच मिनिट बाद किसी न किसी के साथ भागती ही रहती है।"[52]

यहाँ 'कृपा' शब्द द्वारा बिजली की धाँधली को व्यंजित किया गया है।

"आदमी प्रतिभावान थे हमारे नौसेना अध्यक्ष का नाम उन्होंने एडमिरल गुलज़ारीलाल नंदा बताया। श्रोता धन्य हो गए। वन्स मोर वन्स मोर की नारेबाजी शुरू हो गई।"[53]

'प्रतिभावान' शब्द का विपरित अर्थ प्रयोग हुआ है । ये शब्द अज्ञानता को अभिव्यंजित करता है।

"भुखमरे देशों में घास उगाना बहुत आवश्यक है ताकि लोगों की अक्ल के लिए चारे की कमी न रहे।"[54]

"पाठ्यक्रम भानमती का पिटारा बन गया है जिसमें पाठ्य का अपाठ्य और क्रम का व्यक्तिक्रम हो जाना मामूली बात है।"[55]

"शादी एक सुखद दुर्घटना है। पति कहलाने वाला एक असहाय वर्ग अपने को एक स्वस्थ प्रशासन से जोड़ता है। शादी से पहले हर आदमी एक शेर होता है। शादी के बाद गधा हो जाता है। शिकार करना भूल जाता है और केवल बोझ ढ़ोता है।"[56]

"पत्थर दिल है हमारा हाईकमाण्ड। मैं कहता हूँ – हाईकमाण्ड तू आदमी नहीं कम्प्यूटर है। कम्प्यूटर पर मेरे आंसूओं का असर होगा।"[57]

चूनाव का टिकट न मिलने पर नेता का दर्द आंसूओं द्वारा फूटता है। इसी बात को व्यंजित किया गया है।

"अपने देश की पुलिस बड़ी ईमानदार है। सही चोर की तलाश करती और गलत आदमी को चोर सिद्ध कर देती है। इसी बात के लिए उसे वेतन दिया जाता है ताकि अदालतें चलती रहें और देश से गरीबी दूर होती जाये।"[58]

यहाँ भारतीय पुलिस प्रशासन में हो रहे भ्रष्टाचार और बेईमानी को 'ईमानदारी'

शब्द द्वारा व्यंजित किया गया है।

"स्वर्ग जब धरती पर उतर ही आयेगा तो अवश्य काफी झगड़ा मचेगा।..... और इस झगड़े का परिणाम यह होगा कि प्रत्येक दल स्वर्गवासी होना चाहेगा और वामपंथी दल इसलिए स्वर्ग के नाराज होंगे कि यह धार्मिक सी चीज़ साली उतरी ही क्यों?"59

- 'स्वर्गवासी' शब्द मृत्यु को सूचित करता है। किन्तु यहाँ ये शब्द देश के प्रमुख दलों की भ्रष्टता और मूर्खता का पर्दाफाश करने के लिए प्रयोग हुआ है।

"अब तक की सूचनाओं के अनुसार बाढ़ में घिरे सारे पशुओं को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचा दिया गया है।"60

यहाँ पशुओं से तात्पर्य है - बेसहारा और असहाय लोग जो बाढ़ से पीड़ित है।

"सुनती हूँ, दिल्ली में संसद सदस्यों के क्वार्टर बड़े अच्छे बने हैं। तुम होते तो मैं तुम्हें कहती कि और कुछ नही हो सकते तो कम-से-कम एम.पी. ही हो जाओ। कोई झंझट न होती। सिर्फ साल में एक बार बजट पर कविता(1) बनाकर पढ़ देनी पड़ती है। वह मैं कर देती।"61

"वह बोले - "आये तो हैं, पर बड़े बाबू को पूजा देनी पड़ेगी।" मैंने पूछा - "क्यों?" वह बोला - "भैया, येल्लो, जैसे तुम जानते नहीं। अरे पूजा देने का कोई करण है? हमारा काम है। तुम कर सकते हो। अब तुम नहीं करना चाहते तो हम पूजा देंगे।"62

'पूजा' शब्द यहाँ 'रिश्वत' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

"आपके यहाँ शादी है?" मैने पूछा। 'नहीं' वह बोली, 'मैं इस सीजन में गहने खरीदती हूँ, ये पेपर आउट करने, परीक्षा हाल में नकल कराने और पेपर के नम्बर बढ़ाने का सीजन है न। 'ओह!' मेरे मुँह से निकला"63

"पैंफलेट में कहा गया था कि बहुत से लड़कें नालायक निकल जाते हैं, ठीक से पढ़ नहीं पाते या उद्योग-धंधा नहीं सँभाल पाते। ऐसे लड़कों के लिए विशेष रूप से ऊँचे तबकों के लड़कों के लिए नेतागीरी से बढ़कर और कोई व्यवसाय नहीं। अधिकांश ऐसे ऊँचे लड़के ही इस ट्रेनिंग सेंटर में विशेष लाभ उठाते है।"64

'ऊँचे लड़के' शब्द से अर्थ है नालायक, अनपढ़ और आवारा लड़के।

"ठेकेदार को अपने ठेके के बिल में आसक्ति का भाव होता है, किन्तु जिस कार्य का ठेका लिया जाता है, उसके कार्य में अनासक्ति का भाव होता है।"65

"औरतों को देखते ही मर्द जात की जीभ से लार टपकने लगती है।"[66]

यहाँ औरतों को देखते ही मर्दों के अंत: भाव को व्यंजित किया गया है।

"आजकल के बंदरों को अक्ल आ गई है। जब वे टोपियाँ पहनने के बाद टोपियाँ फेंकते नहीं बल्कि टोपी वाले की फेंकी हुई टोपी भी उठाकर पहन लेते हैं।"[67]

आज की परिस्थिति के वैचित्र्य को व्यंजित किया है।

"एक दिन महान प्रतिभा के कारण एक पूंजीवादी व्यवस्था के अंश की समाप्ति हुई और दुकान पर ताला गल गया।"[68]

जिसके कारण व्यवसाय ठप्प हो गया है उसे 'महान् प्रतिभा' कहा है। यहाँ शब्द का विपरित अर्थ ग्रहण किया गया है।

"बच्चों की अधिक संख्या इस बात का प्रमाण नहीं है कि पति-पत्नी में प्रेम है। घनी दाढी मूँछ भी यह सिद्ध नहीं करती कि वह सिक्ख ही है। इसी प्रकार बी.ए., एम.ए., पी-एच.डी. पदवी प्राप्त महाशय बुद्धिमान भी है, यह ही कोई स्वयं सिद्ध बात नहीं है। बड़े-बड़े 'वेदप्रकाश' मुर्ख शिरोमणि होते हैं।"[69]

"कई चौदह कैरट के विद्यालय हैं जिनसे पाँच रूपया देकर घर बैठे 'साहित्यचार्य' की उपाधि प्राप्त कर सकते है।"[70]

"अपना यह बोस है न्, सहसा प्रवेश करने की कला में पद्मविभूषण है।"[71]

"एक दिन एक ऐसा ही दाढ़ीदार मेरे पास आया। बोला - 'अंकलजी', मैं व्यंग्य लिखना चाहता हूँ। तगड़ा, धारदार, नुकीला व्यंग्य जैसा आप लिखते है। क्या करूँ? 'पहले अपने चेहरे की घास छीलो। ख़ामखाह चेहरे पर मुगल गार्डन उगा लेने से हर कोई 'काका हाथरसी' नहीं बन जाता। चेहरे पर ताजी हवा लगने दो। फिर चाहे व्यंग्य लिखो या धोबी का हिसाब लिखो। साहित्यकार कोई टी.वी सेट नहीं होता कि दाढ़ी का एन्टीना जरूरी हो।"[72]

"तुम तो जानते हो प्रभु कि कुत्ता तो महाभारत काल में साक्षात यमराज था, यदि यमराज की निगाह किसी पर तिरछी पड़े तो वह जिन्दा नहीं रहता पर प्रभु आदमी का ज़हर भी इतना तेज है कि काटने के बाद पागल कुत्ता भी जिन्दा नहीं रहता।"[73]

"साँप का ज़हर होता" है 'आदमी का ज़हर' नहीं होता। यहाँ मनुष्य को जानवर के ज़हर से अधिक ज़हरिला बताकर मनुष्य के स्वभाव एवं प्रकृति पर प्रहारात्मक व्यंग्य किया है।

"मंत्री महोदय का बंगला एक रमणीय पहाड़ी पर स्थित है। दूर नीचे इन्सानों की बस्ती नज़र आ रही थी। पहाड़ी के ऊपर से वे सारे मकान और इन्सान बहुत बौने नज़र आ रहे थे।"[74]

'बौने' शब्द का अर्थ है – कद में छोटे आदमी। नेता के दबदबे तथा उसकी जाहोजलाली भरे बंगले के सामने सामान्य आदमी बौना अर्थात् छोटा प्रतित होता है।

व्यंग्यकार को अपने उद्देश्य तक पहुँचने के लिए सही पकड़ और निरूपण की आवश्यकता रहती हैं। इसमें जो शब्दार्थ योजना व्यंग्य भाषा बनकर संप्रेषित करता है इसका अर्थ व्यंजना शक्ति के द्वारा ग्रहित होता है। व्यंग्य निबंधों में देश, समाज तथा व्यक्ति के जीवन में व्याप्त विषमताओं तथा विडम्बनाओं पर आलोचनात्मक प्रहार व्यंजना शब्द-शक्ति द्वारा किया गया है।

अभिधा, लक्षणा, व्यंजना आदि शब्द-शक्ति के प्रयोग से व्यंग्य भाषा की प्रहारात्मक शक्ति बढ़ी है। इससे व्यंग्य भाषा रोचक और प्रभावकारी बन सकती है।

व्यंग्य निबंधों में प्रयुक्त विचलनमूलक भाषिक प्रयोग

विचलन (Deviation) को विपथन या अतिक्रमण भी कहा गया है। भाषा का अपना व्याकरण है जिसमें शब्द, ध्वनि, लिंग, वचन, कारक, अव्यय आदि व्याकरण सम्मत प्रयोग किया जाता है। किन्तु कभी-कभी वह व्याकरण विरूद्ध मार्ग अपनाने लगती है। जहाँ भाषा व्याकरणिक नियमों का उल्लघन करती है वहाँ विचलन होता है।

आधुनिक गद्य और पद्य साहित्य में इसका प्रयोग अधिक हुआ है। किन्तु इससे पहले भी विचलन का प्रयोग होता आ रहा है। जो 'विक्रोक्ति' के रूप में है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने विचलन को अन्यथाकरण कहा है। "अन्यथाकरण अर्थात् जो जैसा है, उसे वैसा न रहने देना।"[75]

विचलन का प्रयोग सचेत तथा व्यवस्थित रूप से न किया जाये तो कथ्य में सोद्देश्यता नहीं आ सकती और शब्द इसके अर्थ से वंचित हो जाने का खतरा रहता है। विचलन पाठक का ध्यान एक ओर से हटाकर दूसरी ओर आकृष्ट करता है। शैलीविज्ञान के अंतर्गत 'विचलन' को तथा इसकी संरचना पद्धति को महत्त्व दिया गया है।

शैलीविज्ञान में विचलन की सहेतुकता स्पष्ट करते हुए डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने लिखा है कि - "विचलन को सहेतुक, साभिप्राय, इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसके पीछे काम करने वाला तत्त्व और कुछ नहीं बल्कि कलात्मक संवेग की अपनी विशिष्टता है। वैसे उसके अन्य हेतु भी हो सकते है; यथा अलंकरण, शब्दक्रीडा आदि।"[76]

"सामान्य भाषा के सामान्य भाषिक नियमों के अतिक्रमण को ही 'विचलन' (डेविएशन) कहा जाता है।"[77]

भोलानाथ तिवारी के अनुसार "सामान्य भाषा के नियम, बंधन, चलन अथवा पथ को छोड़कर नए का अनुसरण करना, नए पथ पर चलना ही विचलन (Deviation), विपथन आदि कहलाता है।"[78]

साहित्यकार विचलन का प्रयोग क्यों करता है तथा इसकी व्याख्या के संदर्भ में डॉ. कहार ने लिखा है कि - "जब साहित्यकार अभीष्ट भावों या विचारों की समक्ष एवं अर्थ व्यंजक अभिव्यक्ति के लिए अपेक्षित विकल्पों को उपलब्ध नहीं कर पाता था उन्हें सामर्थ्यहीन प्रतीत करता है, तब ऐसी स्थिति में वह व्याकरण सम्मत प्रचलित रूढ़ियों के दायरे से बाहर निकल कर अव्याकरणिक संरचनात्मक नव प्रयोगों के द्वारा शैली-शिल्प सम्बन्धी जो नई-नई राहों को अन्वेषित करता चलता है। उसकी तथाकथित अव्याकरणिक अथवा व्याकरण विरूद्ध आचरण की प्रक्रिया को शैली विज्ञानिकों ने 'विचलन' की संज्ञा से अभिज्ञापित किया है।"[79]

विचलन की स्वरूपगत विशेषता

1) विचलन प्रतिमान से विचलन है।
2) विचलन भाषिक नियमों का अतिक्रमण है।
3) विचलन अव्याकरणिक संरचनागत भाषा का नव्य प्रयोग है।
4) शैलीविज्ञान के संदर्भ में विचलन भाषा का अर्थमूलक तथा वाक्यमूलक उपकरण है।

व्यंग्य निबन्ध का स्वरूप छोटा होता है। इसमें कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक कहना होता है। व्यंग्यकार व्यंग्य निबंध में वक्रता लाने तथा उद्देश्य की पूर्ति के लिए शब्दों तथा वाक्यों का ऐसा प्रयोग करता है जो थोड़े ही में अधिक कहने की क्षमता रखता है। व्यंग्य निबंध में विचलन का प्रयोग व्याकरण सम्मत न होते हुए भी व्यंग्य को अधिक तीखा और आकर्षक बना देता है। व्यंग्यकार इस

शैलीय उपकरण का प्रयोग अपनी अभिव्यक्ति तथा व्यंग्य को प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से करते है।

विचलन को प्रस्तुत करने के अनेक स्तर है। सामान्यत: सहप्रयोगों के रूप में, व्याकरणिक नियमों के भंग के रूप में, साहित्येत्तर शब्दों के रूप में, पद क्रम के रूप में जैसे अनेक स्तरों पर विचलन प्रस्तुत किये जा सकते है। हिन्दी व्यंग्य निबंधों में प्राय: सभी स्तरों के विचलनों का व्यंग्यकारों ने यथास्थान प्रयोग किया है।

1) सहप्रयोगात्मक विचलन / सहप्रयोग विचलन

सामान्य भाषा में जिसका प्रयोग जिसके साथ होता हो, उसे छोड़ कर अन्य के साथ प्रयोग, सहप्रयोग विचलन कहलाता है। सहप्रयोग विचलन का प्रयोग अनेक रूपों में हो सकता है। जैसे -

i) संज्ञा का संज्ञा के स्तर पर प्रयोग (संज्ञा सहप्रयोग विचलन)

ii) संज्ञा के साथ विशेषण का प्रयोग (विशेषण सहप्रयोग विचलन)

iii) संज्ञा का क्रिया के स्तर पर प्रयोग (क्रिया सहप्रयोग विचलन)

iv) क्रिया का क्रिया विशेषण के स्तर पर प्रयोग (क्रिया विशेषण सहप्रयोग विचलन)

i) संज्ञा का संज्ञा के स्तर पर प्रयोग

संज्ञा सहप्रयोग विचलन में संज्ञा का अर्थ-विस्तार संज्ञा में होता है। व्यंग्य निबंधों में से इसके कुछ उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है। जैसे -

"हीनता के रोग में अहित का इंजेकशन बड़ा कारगर होता है।"[80]

इंजेकशन दवा का होता है, अहित का नहीं होता। 'अहित का इंजेकशन' प्रयोग संज्ञा का संज्ञा के स्तर पर विचलन प्रयोग है।

"अभी मेरे पास दो-तीन मित्र बैठे थे। एक ने कहा ये लोग इतिहास की कूड़ेदानी में जायेंगे।"[81]

"जो जनता का विश्वास खो दे उसे शिक्षा-विभाग में भेज देना चाहिए। शिक्षा-विभाग कचरे की टोकरी है। जो सामान बेकार होता जाय उसे इसमें फेंकते जाना चाहिए।"[82]

यहाँ संज्ञा सहप्रयोग विचलन द्वारा शिक्षण जगत में व्याप्त भ्रष्टाचार को व्यंजित किया गया है।

"कहाँ पर नहीं खिल रहे भ्रष्टाचार के फूल। जहाँ-जहाँ जाती है सरकार, उसके नियम कानून, मंत्री, अमला, कारिंदे। जहाँ-जहाँ जाती हैं सूरज की किरन, वहीं-वहीं पनपता है भ्रष्टाचार का पौधा।"[83]

"ये करप्शन की, भ्रष्टाचार की थैली है।"[84]

"उसके बदन पर अनुभव की झुरियाँ साफ-साफ दिखाई दे रही थी।"[85]

"मंन्त्रीजी रात को लौटे तो उनकी कार का पहिया यक्ष के आँसुओं के कीचड़ में फँस गया।"[86]

"यदि यह न हो तो ज्ञान का पानी बेकारी की गटर में जाता है।"[87]

"इसलिए अब हमारा नेता देशभक्ति के गरम कोयलों पर देश भक्ति का पुलाव पकाता है।"[88]

यहाँ रेखांकित किये संज्ञा सहप्रयोग विचलन द्वारा खोखली और दिखावा पसंद देश-भक्ति दिखानेवाले नेता पर व्यंग्य किया गया है।

"मेरे मस्तिष्क में तुरन्त विचारों की संसद जमा हो गई।"[89]

"महँगाई जीर्ण ज्वर है, बेरोजगारी 'अस्थमा' है, भ्रष्टाचार 'कैंसर' है, पंजाब समस्या 'कार्डिनिक केस' है, कश्मीर समस्या बेकार का सिरदर्द है। बीमारी सब ठीक होगी पर समय तो लगेगा ही।"[90]

"अपमान की पूरी बोतल गटक जाओ और बाद में 'सोरी' का छोटा-सा ढक्कन।"[91]

वहाँ संज्ञा सहप्रयोग विचलन द्वारा अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग करने के तरीके को अभिव्यंजित किया है।

"वास्तव में हमारी तमाम जिंदगी चुनौतियों की ही एक लम्बी बारात है।"[92]

"मगर दुर्भाग्य के ढ़ेर में भी कभी-कभी सौभाग्य की सुई निकल आती है।"[93]

"प्रजातंत्र जांडिस के पेशाब का सेम्पल हो गया है।"[94]

"सब संस्थायें रिंग मास्टर की जेब में पड़ी-पड़ी संस्कृति का मुरब्बा बन गई है।"[95]

"जो इन भूमिका में रहेंगे वे 'आलोचना के विदूषक' होकर रह जायेंगे।"[96]

"धर्म के कंधे पर स्वार्थ की बंदूक रखकर उसी जनता को निशाना बनाया जाता है।"[97]

चुनाव लड़ रहे नेता धर्म के नाम पर वोट बटोरते आये हैं। इसी बात को

यहाँ संज्ञा सहप्रयोग विचलन द्वारा व्यंजित किया गया है।

ii) संज्ञा के साथ विशेषण का प्रयोग

संज्ञा के साथ विशेषण के प्रयोग में विशषण का अर्थ-विस्तार होता है। इसे काव्य-कला में विशेषण विपर्यय या विषेशण सहप्रयोग विचलन भी कहा गया है। व्यंग्य निबंधों में इसके उदाहरण इस प्रकार है।

"भ्रष्टाचार की सूची में नाजायज तरीके से तबादला कराना भी है। यह भी गलत है। तबादले की एक बँधी-बँधाई नैतिक पद्धति है। अफ़सर या मन्त्री से सम्वन्ध होने से तबादले होते हैं। फिर तबादले करने के रेट बँधे हैं।"[98]

सरकारी दफ्तरों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया गया है।

"अद्भूत सहनशीलता है इस देश के आदमी में और बड़ी भयावह तटस्थता। कोई उसे पीटकर उसके पैसे छीन ले, तो वह दान का मंत्र पढ़ने लगता है।"[99]

यहाँ तटस्थता के साथ 'भयावह' विशेषण का प्रयोग किया है। इसके द्वारा भारतीयों के व्यवहार की विड़म्बना पर कटुता से व्यंग्य प्रहार किया है।

"क्या मेरी टूटी टाँग में से दर्द की तरह श्रद्धा पैदा हो गई है? तो यह विकलांग श्रद्धा है।"[100]

"वे आए और कला की शब्दावली से मुझे रौंदने लगे। में स्वयं को अनेक लालटेन व्यक्तित्त्व के समक्ष निस्तेज अनुभव करने लगा, मगर मुस्कराता रहा।"[101]

"यह मुर्दा शहर है, यहाँ की सारी इमारतें कंकाल हैं और मेरा मेरा शरीर पारदर्शी है। मुझे शब्दों के अर्थ और बदन पर लिपटे कपड़े व्यर्थ लगते हैं। मैं उन्हें उतारना चाहता हूँ और इस मुर्दा शहर की कंकाल इमारतों के बीच से गुज़र जाना चाहता हूँ।"[102]

"इधर मेघदूत के कुछ ऐसे होनहार अनुवाद प्रकाश में आऐ हैं, जिनमें यह भी कह दिया गया है, जो कि यक्ष संकोचवश मेघ से नहीं कह पाया था।"[103]

यहाँ 'होनहार' विशेषण व्यक्ति के साथ प्रयुक्त न होकर के संज्ञा-अनुवाद के साथ में प्रयोग किया गया है।

"कभी नहीं सोचा होगा गांधीजी ने कि वे देश के फैशनपरस्तों की स्वतंत्रता के लिए स्वतन्त्रता माँग रहे हैं, जो अति वैभव से पीड़ित हैं और करने को कोई काम न होने के कारण नंगे होकर विचित्र वेश-भूषा में राजधानी की फैशनेबल सड़कों पर हुड़दंग मचाते फिरते हैं।"[104]

"मैं जरा भी शरच्यंद्री आदमी नहीं हूँ।"[105]

"गालियों की बरसात अच्छी दिलचस्प थी लेकिन मेरे ऊपर तो फिर वह मेरा हलवाई सूरत पीपेनुमा पड़ोसी गिर पड़ा था।"[106]

"प्रत्येक नेता/मंत्री इन चीज़ों की उपयोगिता पर लच्छेदार भाषा में जोरदार भाषण देता है।"[107]

"दफ्तरों में रिसेप्शनिस्ट लिपस्टिकी मुस्कान से वेलकम कहती है, तो आगन्तुक पर भी वह नशा असर करता है।"[108]

"..... फाइल बीस बार वापस करेंगे तो हर बार नये मुद्दे पर होगी। इस बीच यह तन्वंगी फाइल गर्भवती महिला की भांति स्वस्थ हो जाती हैं।"[109]

"अरे जाओ भी यार! कुछ दिन को तो ये कलमुँहे कारखाने बंद हों, ये सत्यानासी प्रगति थमे!"[110]

"मैं समझ गया कि इस समय वह 'निरपेक्ष' होने के घनघोर मूड़ में हैं, क्योंकि केवल सुनाना हो और सुनने वाला सुनने को तैयार हो तो बोलने वाला बड़ी नेक बात करता है।"[111]

"इस बात का हमें दु:ख है कि हम इस अल्प उम्र में आपको जेबकतरी राजनीति से विच्युत कर रहे हैं, मगर प्रजातन्त्र की दृष्टि से यह जायज था।"[112]

राजनीति में आकर नेता सिर्फ अपने जेब भरने अर्थात् पैसा कमाने का काम करते हैं। प्रजा के पैसों से अनेक सुख सुविधाओं का उपयोग करते हैं, लोगों की जेब काटकर अपनी तिजोरिया भरते हैं। इस अर्थ को व्यंजित करने के लिए 'जेबकरती' विशेषण का प्रयोग 'राजनीति' संज्ञा के साथ किया है।

"अब चाहे मात्र प्रेमी हो अथवा देश-प्रेमी यानी नेता, वायदा कुछ इस तरह करते हैं गोया कपड़े बदल रहे हों या चुनाव सभा में अर्जीनुमा भाषण दे रहे हों।"[113]

"बड़े साहब यानी जनरल मैनेजर अपनी नाटकीय अदाओं और पालिश्ड मुस्कान एवं व्यवहारकुशलता के लिए मशहूर थे।"[114]

यहाँ 'नाटकीय' तथा 'पालिश्ड' विशेषणों के प्रयोग द्वारा अफसर की कार्यकुशलता का परिचय दिया गया है।

"सेवा का ऐसा तक्ख मेवा मिलने पर भी मेरा परमार्थी मन नहीं भरता।"[115]

"गाँव में बाढ क्या आ गयी 'सीजनल' समाजसेवी बड़ी मात्रा में आ गये, चमक-दमक के साथ, हमारे मित्र ने बीवी-बच्चों के पुराने कपड़ों की पोटली

निकाली, बाढ़पीडितों के झुंड के पास गये, मैंने कैमरे का फोकस ठीक किया, मित्र महोदय ने उनकी बीबी ने साड़ी सँभालकर मेकअप को अंतिम टच दिया ओर देखा।"[116]

बाढ़ आते ही कई लोग सीर्फ अपनी प्रसिद्धि के लिए समाजसेवा का कार्य करने निकल पड़ते है ऐसे समाजसेवी लोगों के व्यवहार के लिए 'सीजनल' विशेषण का प्रयोग किया है।

ऊपरोक्त सारे उदाहरण विशेषण सहप्रयोग विचलन के है।

iii) संज्ञा का क्रिया के स्तर पर प्रयोग

संज्ञा का क्रिया के स्तर पर विचलन प्रयोग में क्रिया का अर्थविस्तार होता है। इसे क्रिया सहप्रयोग विचलन भी कहते है। व्यंग्य निबंध में इसके कुछ उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है।

"अर्थशास्त्र ने संस्कार को धोबी पछाड़ दे दी।"[117]

"मैं जानता हूँ, अच्छी लड़कियाँ जानवर की बोली बोलनेवाले युवक से ही प्रेम करती हैं। मेरा लड़का एक लड़की के पीछे कुत्ते की बोली बोलता है।"[118]

..... "घर में मेरा लड़का 'भौं-भौं' करता है, तो बहू 'म्याऊँ' करती है। इससे परिवार का वातावरण सुखद रहता है।"[119]

यहाँ लड़के का 'भौं-भौं' करना और लड़की का 'म्याऊँ' करना दोनों विचलित क्रिया है। यह तो कुत्ते और बिल्ली करते है। यहाँ क्रिया सहप्रयोग विचलन द्वारा लड़का और बहू के बीच हो रही तकरार को व्यंजित किया है। तकरार से वातावरण सुखद नहीं परन्तु तनावपूर्ण रहता है।

"ये असंतुष्ट आँसू पोंछने के लिए चार-चार रूमाल रखते हैं। जो धोती पहनते हैं उनकी धोंती आँसूओं से भीग जाती है।"

.....देवीलाल को अगर बहुमत न मिलता तो इस समय वे जनता के दु:ख से इतना रो रहे होते कि उत्तर भारत की नदियों में बाढ़ आ जाती।"[120]

"ये तो मेरे जैसे लेखकों के पेट पर लात मारने लगे। मैं हास्य-विनोद, व्यंग्य लिखता हूँ। यही मेरी रोजी-रोटी है। मगर मैं कितनी मेहनत करता हूँ, हास्यास्पद चरित्र और स्थिति-निर्माण करता हूँ, मुहावरे खोजता हूँ, भाषा साधता हूँ, सिर ठोककर लिखता हूँ। तब भी नहीं हँस पाता।"[121]

"राजनीति में भी कम लतिहाव नहीं है। इंच भर गहरी संवेदना नहीं होती

पर मगर के आँसू जोर-शोर से ब्रॉडकास्ट किये जाते हैं। जो कुछ है सब अपरी। फिर चाहे शिक्षा पर जोर हो या गरीबों की फ़िक्र। सारे नारे और सिद्धान्त अपने मजे के लिए रगड़े जाते हैं।"[122]

MEHTA LIBRARY ... UNIVERSITY

"महँगाई सबको खा गयी। भाव बढ़ते जा रहे हैं, आदमी घटता जा रहा है।"[123]

यहाँ महँगाई के द्वारा आदमी के घटने की क्रिया, विचलन प्रयोग है। महँगाई जैसी विसंगति को व्यंजित किया गया है।

"नारों ने आकाश छू रखा था, भोगे गुंजाइमान थे, पदत्राण शिरस्त्राण हो रहे थे अर्थात् जूते चल रहे थे। देखो, चुनाव की यही शोभा है।"[124]

"मैं काव्य-प्रेमी व्यक्ति हूँ और कवियों ने पावस की पवित्र ऋतु पर इतना जमकर लिखा है कि मुझे उदासी का दौरा पड़ ही जाता है।"[125]

"आदमी कमीज उतारकर किल्ली पर टाँग दे तो सभ्यता भी उसे छोड़कर किल्ली पर टँग जाती है।"[126]

यहाँ क्रिया विचलन सहप्रयोग द्वारा मानवी की असभ्यता पर व्यंग्य किया गया है।

"जुआ डोरे नहीं डालता, लॉटरी बेशरम वेश्या है जो डोरे डालती है। जुआ कर्करोग है जो लॉटरी जुकाम। लॉटरी से आदमी मरता न हो, पर उसी की साँस लेता है।"[127]

"उपन्यास असम्बद्ध पटरियों पर दौड़ता चलता है, पर वह भगवती चरण वर्मा की पंक्ति में बैठाया जाता है।"[128]

"समाज व्यक्ति पर हावी होकर उसकी कब्र खोदता है जब किसी अक्लमंद व्यक्ति को मौका मिलता है, तो वह समाज की रूढ़ियों व अंधविश्वासों की कब्र खोद देता है।"[129]

कब्र मनुष्य(प्राणी) की खोदी जाती है नहीं की रूढ़ियों तथा अंधविश्वास की। यहाँ क्रिया सहप्रयोग विचलन द्वारा समाज में व्याप्त विसंगतियों पर प्रहार किया गया है।

"धर्मनिरपेक्षता की रामनामी चादर ओढ़ कर घूमों और भाई-भाई का बैंड बजाकर अपनी दुकाने चलाओ।"[130]

"मजनू भी एक सफल लीड़र की तरह वादों की बाउंड्री और सिक्सर मारे जाता है।"[131]

"मेज पर खेती करने के विशेषज्ञ हैं। ये प्रतिज्ञा और संकल्पों के बीज बोते हैं, आशा और विश्वासों की सिंचाई करते हैं, योजनाओं के ट्रेकटर चलाते हैं और फाइलों की फसल काटकर रख देते हैं। सिंचाई के सारे साधन विदेशी हैं, अमेरिकी और रूसी नहरें विशेष रूप से तैयार की गयी है।"[132]

यहाँ क्रिया सहप्रयोग विचलन द्वारा नेताओं की स्वार्थी वृत्ति, रिश्वतखोरी, झूठे संकल्प आदि पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया गया है।

"जिन शायरों के पास सैकड़ों दिल हैं वे दिलों की पोटली को हर समय अपनी जेब में दबाये फिरते हैं। जहाँ कोई अच्छी सूरत देख लेते हैं, एक दिल निकालकर उसकी ओर फेंक देते है।"[133]

"कहां आज से चालीस-पचास वर्ष पहले से वे नौकर कि जब नौकरी की तलाश में निकलते थे तो वफाओं की गठरी सिर पर उठाए फिरते हैं।"[134]

आज के संदर्भ में चालीस-पचास वर्ष पहले के नौकरों की वफादारी को वर्णित किया गया है।

"ज्यों-ज्यों सफेद बालों की छावनी पड़ रही है, हमारे सोये हुए अरमान नये सिरे से अंगडाइयां लेने लगे हैं। श्वेत गंगा से बुरी तरह घिर जाने पर भी रसिया कानों का मिजाज ठिकाने नहीं आया। क्या मजाल कि जूं तक भी इन पर रींगने की गुस्ताखी कर सके।"[135]

"डंडा पकड़े खड़े लोग उनको देखते है और गम खाकर गुस्सा पीकर रह जाते हैं। और कुछ उसी खाने के अंदाज में, कि जैसे किसी को पायें तो चबा जायें, दाँत पीस-पीसकर और भी जोश-खरोश से बोलने लगते हैं।"[136]

"एक-दो आदमी कटोरा तोड़कर खा रहे हैं, क्योंकि उन्हें बहुत ज़ोर की भूख लगी है।"[137]

"बेटा, अपने व्यापारी बाप के कमर्शियल इरादों पर लात मारों और बिकने से इनकार कर दो।"[138]

यहाँ विचलन प्रयोग द्वारा दहेज जैसी समस्या को अभिव्यंजित किया है।

"रिपोर्टें हमारी अलमारियों में धूल चाटती हैं।"[139]

"विकास ऐसा हुआ है कि कल तक लोग पुस्तकालय में जाकर अखबार बांचते थे और अब वीडियो लाइब्रेरी की शरण में जाकर फिल्मावलोकन के नये-नये अनुभव बटोरते है।"[140]

"गजब यह कि गम खाने और आँसू पीने से बचे हुए समय में क्या खाएँगे

आप इक्कीसवीं शताब्दी में, यह हमसे नहीं - हमारे अभिन्न सखा चंद्रगुप्तानन्दजी से पूछ कर देखिए। एकदम नए-नए आइटमों की बारात आपके सामने पूरे बैंडबाजे के साथ खड़ी हो जाएगी।"[141]

"हम कथाकारों को नहीं, सिर्फ उनकी कृतियों को कुतरते हैं.....।"[142]

"आम आदमी के चेहरे पर लू चल रही है।"[143]

"बिजली आंख मिचौली खेलने लग गई, पानी धोखा देने लग गया। नई कालोनियों की चारदीवारी छोटी हुई, लेकिन दिमाग ऊंचे हो गये। जुबान फैलने लगी, दिल सिकुड़ने लगे।"[144]

"आपकी बातों में आदर्शवादिता की बू आती है, दुनियादारी की खूशबू नहीं।"[145]

क्रिया सहप्रयोग विचलन द्वारा खोखले आदर्शों पर व्यंग्य किया है।

"शपथ खाइए और तत्काल कुर्सी से चिपक जाइए, फिर आपके विरोधी खेमे वाले आपको कुर्सी से नीचे उतारने की शपथ खाते रहेंगे।"[146]

यहाँ राजनीतिक दाव-पेच पर व्यंग्य किया गया है।

"भाई साहब सभ्यता संस्कृति तक सिकुड़ती जा रही है। तुम मेरा मतलब समझ गए होगे। यानी अलग-अलग सभ्यताएँ, भिन्न-भिन्न संस्कृतियाँ नजदीक आती जा रही हैं और हो सकता है कि एक दिन दुनिया-भर की सभ्यता-संस्कृति कागज के लिए लिफाफे में बंद हो जाए।"[147]

सभ्यता-संस्कृति सिकुड़ती जा रही है अर्थात् सभ्यता संस्कृति लुप्त हो रही है। यहाँ क्रिया सहप्रयोग विचलन द्वारा सांस्कृति के हो रहे पतन को व्यंजित किया है।

"उनकी पूरी काया से ही हर पल शराफत की किरणें फूटती रहती हैं।"[148]

"पूंजीवाद की कार में बैठकर वामपंथी विचारधारा गांधीवाद की सड़क पर दौड़ रही है, पर कौन किससे दुश्मनी निकाल रहा है।"[149]

"आदर्शवादिता की दकियानूसी रूढ़ियों को तोड़कर, सिद्धान्तवादिता के ढकोसले से मुँह मोड़कर, मान-अभिमान का झूठा मोह छोड़कर और अपने वर्चस्व के लिये सर्वस्व न्यौछावर करने का दमखम रखने वाले और कोई नहीं चमचे ही हो सकते हैं।"[150]

चमचागीरी की कला को अभिव्यंजित किया गया है।

"विधवा को उसने ऐसी-ऐसी उपाधियों से विभूषित किया कि वह अपमान

के प्याले को पीकर घर बदर हो गई।"[151]

यहाँ क्रिया विचलन द्वारा समाज में विधवाओं की दयनीय स्थिति को चित्रित किया गया है।

iv) क्रिया का क्रिया विशेषण के स्तर पर प्रयोग

इसमें क्रियाओं का अर्थ-विस्तार होता है। क्रिया का क्रिया-विशेषण के स्तर पर विचलन प्रयोग के कुछ उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है। जैसे -

"उन्होंने खुद अपने हाथों मादर्सवाद का मुण्डन कर दिया था।"[152]

'मुण्डन करने' का अर्थ बालों को उतारना है। यहाँ मार्क्सवाद के सिद्धान्तों को नकारा गया है और परिस्थिति जन्य प्रहारात्मक व्यंग्य किया गया है।

"सबसे अच्छी बात तो यह थी कि अश्रद्धा श्रद्धा की अपेक्षा जोर से बोल रही थी।"[153]

"चतुर सरकार मुँह पर कपड़ा डालकर, लचकती-फचकती, फुरती से कमीशन की गली से निकल जाती है और उधर समस्याएँ हुड़दंग करती रहती है।"[154]

"चूहे बेताब हैं। वे भूख से तिलमिला रहे हैं। वे कहते हैं - तुम नहीं जानते पर हम जानते हैं कि हमें अब क्या खाना चाहिए।

और में देखता हूँ चूंहे दाँत किटकिटाकर भिड़ जाते हैं।

पहले चूहे संविधान को कुतरकर खा जाते हैं।

फिर चूहे सरकार को खा जाते हैं, संसद को खा जाते हैं, न्यायपालिका को खा जाते हैं।"[155]

"जो चूहे की तरह देशी की आत्मा को भीतर से कुतरकर खाते रहे हैं, उन्होंने मेनन को देशद्रोही करार दिया था।"[156]

"कांग्रेसी को उलझन नहीं है। वह सीधा साफ सोचता है। वह तो सत्ता के पास खिसकेगा रेंगता हुआ।"[157]

यहाँ क्रिया विशेषण सहप्रयोग विचलन द्वारा कांग्रेस पार्टी के नेताओं की सत्ता लोलुपता पर व्यंग्य किया है।

"एक के बाद एक कारें धीरे-धीरे रेंगती हुई सिनेमा के अहाते में घुसने लगी।"[158]

"अंग्रेजी हकुमत में वे राय बहादुर बने और स्वधीनता के बाद उन्होंने खादी का पाणिग्रहण कर लिया।"[159]

"जवाब में पहेली-सी बुझाते हुए, विलायती स्टाइल में मैंने कन्धे मटकाये और बिना कोई बात कहे, टहलता हुआ आगे बढ़ गया। बिजली के खम्भे की रोशनी मैं फैली हुई, एक दूसरे को काटती हुई अपनी परछाइयों को कुचलता हुआ मैं एक परछाई-सा ही धीरे-धीरे अपने घर की ओर चलता रहा।"[160]

"सारा देश भाषण खाता, भाषण पहनता-ओढ़ता है और भाषणों के मकान बनाकर रहता है।"[161]

"कविताएँ लँगड़ाती लय लिए होती हैं, पर वे निराला की कविता की वराबरी करती दिखायी जाती हैं।"[162]

निम्न कोटी की कविताओं के सृजन पर व्यंग्य किया गया है।

"स्टेशन की एक टूटी हुई बेंच पर एक कोने में बैठा में टिमटिमा रहा था।"[163]

"कृष्ण तो बड़ी रूचि के साथ हुड़दंग मचाकर होली खेलते है।"[164]

"जूते मानवीय मूल्यों से गर्द खाए मटमैले हो गए थे।"[165]

"आप चुनौतियों से मुंह छिपाएँ तो वे शेर की तरह दहाड़ेगी। आप जमकर उनका पीछा करें तो वे दुम दबाकर भाग खड़ी होंगी।"[166]

"आप के घर के रास्ते में एक नाई की दुकान है। वहां एक रिटायर्ड वृद्ध आपको कुर्सी पर जमे हुए मिलेंगे। इनके हाथ में 'प्रताप' अखबार का एडीटोरियल होगा। जब आप ध्यानपूर्वक देखेंगे तो आपको विदित हो जाएगा कि ये महाशय अखबार पढ़ने की अपेक्षा अखबार सूंघ रहे हैं। आप एक घण्टे बाद जब घर से लौटेंगे तो वे उसी प्रकार एडीटोरियल को टकटकी बांधकर देख रहे होंगे।"[167]

"क्योंकि गली में तेल गर्म मसालों की गंध रेंगती है।"[168]

"आज की दुनिया में सच सड़कों पर और गलियों में लँगड़ाता हुआ चलता है, चलचल कर रूकता है, और रूक रूक कर चलता है।"[169]

समाज में से सत्य का आचरण कम तथा असत्य की अधिकता को व्यंजित करने के लिए क्रिया-विशेषण सहप्रयोग विचलन का प्रयोग किया गया है।

"उसके दर्द को मैं अपनी मुस्कराहट में घोलकर पी जाना चाहता था।"[170]

"सारे मुलक में साबुन और डिरजेंट की बाढ़ है और उसमें दागों को ढूंढते ही रह जाओ?"[171]

अतिशयोक्तिपूर्ण विज्ञापनों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया गया है।

ऊपरोक्त सभी उदाहरण क्रिया का क्रिया-विशेषण के स्तर पर विचलन सापेक्ष प्रयोग के हैं।

2) साहित्येत्तर शब्दों के रूप में विचलन

साहित्य के बाहर के शब्दों का प्रयोग साहित्य में करना एक प्रकार का विचलन है। इस प्रकार के शब्दों का व्यंग्य निबंधों में प्रयोग मिलता है। व्यंग्यकार ऐसे शब्दों के द्वारा व्यंग्य को अधिक तीव्र और प्रहारात्मक बनाते है। इतना ही नहीं विभिन्न क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों का वर्णन साहित्येत्तर शब्दों के द्वारा किया जाता है। इसके कुछ उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है। जैसे-

"सन्त बडा 'काँइयाँ' होता है। हम समझते हैं, वह आत्म-स्वीकृति कर रहा है, पर वास्तव में वह विटामिन और प्रोटीन खा रहा है।"[172]

यहाँ 'काँइयाँ' शब्द साहित्येत्तर है। इसके द्वारा संतों के भोग विलासवाले चरित्र की ओर संकेत किया गया है।

"उस दिन अखबारों में पढ़ा की देश अश्रूगैस में आत्मनिर्भर हो गया, तो समझ गया कि रिनासां हो गया।"[173]

'रिनासां' शब्द यूरोप में हुई औद्योगिक-क्रांति के लिए प्रचलित है। यहाँ भारत की आर्थिक परिस्थिति को व्यंजित करता है।

"कुछ लोग बड़े काइयाँपन से इस सबको सही बनाने की कोशिश करते हैं।"[174]

"सीढ़ी-दर-सीढ़ी चढ़कर वह बरसों में मंत्री बनते, उसके बजाए वह अवसरवाद के 'लिफ्ट' में बेठे और मंत्री बन गए।"[175]

'लिफ्ट' शब्द द्वारा राजनैतिक दावपेच को व्यंजित किया गया है।

"बीमा आयोग को सर्वप्रथम प्रेम के क्षेत्र पर एकाध नज़र डालनी चाहिए। इस क्षेत्र में अब तक कवि, लेखक और अदालत ही घुसपैठ करते आए हैं।"[176]

"नेता की अभी नयी-नयी तरक्की हुई थी। एक राजनीतिक घुसपैठ में वह जिला कोऑपरेटिव बैंक का मैनेजिंग डाइरेक्टर बना दिया गया था।"[177]

'घुसपैठ' शब्द द्वारा नेता की उच्चे पद पर पहुँचने की होशियारी को अभिव्यंजित करता है।

"कहीं-कहीं राज्यपालों ने अपने जँवाईलालों को कुलपति बनाया है, और कुछ नहीं हुआ तो अपने अधीनस्थ विश्वद्यिालय में तो घुसेड़ ही दिया है।"[178]

सरकारी अफसरों द्वारा अपने-अपने रिश्तेदारों को सिफारिस से नौकरी पर रखने की वृत्ति पर 'घुसेड़' शब्द द्वारा व्यंग्य किया गया है।

"किसी ने कहा भी है - 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि'। पर कोई 'कवि' कैसे बन पायेगा यदि उसकी कल्पना की घुसपैठ ही सशक्त न हो।"[179]

'घुसपैठ' साहित्येत्तर शब्द है। इसका प्रयोग अनेक व्यंग्यकारों ने अपने व्यंग्य निबंध में किया है।

व्यंग्यकारों ने व्यंग्य में प्रभावात्मकता लाने तथा विसंगतियों का चित्रण करने के लिए साहित्येत्तर शब्दों का प्रयोग किया है।

3) पद-क्रम विचलन

प्रत्येक भाषा में वाक्यों के पदों का क्रम व्याकरणिक नियमों के अनुसार निश्चित होता है। इस पद-क्रम का वाक्यों में मौलिक महत्त्व होता है। हिन्दी में वाक्य संरचना की दृष्टी से पदक्रम निश्चित है। किन्तु कभी-कभी साहित्यिक भाषा इस पद-क्रम का सर्वथा पालन नहीं करती। अपने कथ्य तक पहुँचने के लिए साहित्यकार व्याकरण के इन नियमों का उल्लंघन करता है। जिस वाक्य का क्रम पहले आना होता है वह बाद में आता है और जो क्रम बाद में आता है वह पहले आ जाता है। इन्ही निश्चित वाक्यों के पदों का क्रम बदलना एक प्रकार का विचलन कहलाता है। इसी को पद-क्रम विचलन अथवा पद-क्रम विपर्यय कहते है।

हिन्दी व्यंग्य निबंध में व्यंग्य को संप्रेषित करने तथा प्रहारात्मक बनाने के लिए व्यंग्यकारों ने पद-क्रम विचलन का प्रयोग किया है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है -

"पछतावों की नई-नई फसल जरूरी है, देश के जिंदा रहने के लिए।"[180]

इस वाक्य का सामान्य पद-क्रम यह है - 'देश के जिंदा रहने के लिए पछतावों की नई-नई फसल जरूरी है।' किन्तु यहाँ व्यंग्यकार को 'पछतावों' पर अधिक बल देना था, इस उद्देश्य से इसका पद-क्रम विचलन किया गया है।

"कितने लोग हैं, जिनको महत्वकांक्षा होती है कि टैक्स की बीमारी से मरे पर मर जाते हैं निमोनिया से।"[181]

"खैर, बात कुछ भी हो, यह जरूर मानना पडेगा कि लार्ड मैकाले था एक बहुत बड़ा भविष्यद्रष्टा। वह जानता था कि एक दिन ऐसा आएगा जब कि इस देश के छात्र पुलिस से निकट सम्बन्ध स्थापित करेंगे और इसी कारण उसने एक ओर तो नयी शिक्षा की पद्धति निश्चित की और दूसरी और 'ताजीराते हिन्द' का मसौदा

भी तैयार किया।"[182]

"घबरायी हुई बुद्धिमता के ऊपर आत्मविश्वासपूर्ण मूर्खता का प्रकाश फैलाता हुआ वह पान की दूकान के सामने खड़ा रहा।"[183]

यहाँ 'वह' सर्वनाम वाक्य के प्रारंभ में आना चाहिए किन्तु ये वाक्य के मध्यम में है।

"इस तरह हायहाय और कायँ-कायँ करके जो दफ्तर का समय समाप्त हुआ तो भागे घर की ओर बाज़ार के रास्ते से। इस समय इतनी भगदड़ देखने योग्य होती है।"[184]

"खादी पहनकर कुतर रहे हैं साले पूरे देश को।"[185]

"कहाँ टाँग रखी है सभ्यता!"[186]

यहाँ 'सभ्यता' संज्ञा है जो वाक्य के अंत में क्रिया के स्थान पर है। जबकि क्रिया वाक्य के प्रारंभ में है। अर्थात् यहाँ पद-क्रम विचलन है।

"शरम-हया तो सब पी गये घोलकर!"[187]

क्रिया विशेषण, क्रिया से पहले आना चाहिए, किन्तु यहाँ इसका प्रयोग अंत में किया गया है।

"बेल को कांग्रेस ने अपना चुनाव चिन्ह रखा इसीलिए तो उसमें बैल जैसे गुण हैं। काम करते हैं आराम के साथ।"[188]

ऊपरोक्त रेखांकित किये वाक्य का सामान्य क्रम - 'आराम के साथ काम करते है।' ऐसा होना चाहिए। परन्तु सरकार की धीमी गति से काम करने की प्रक्रिया पर बलपूर्वक प्रहार करने के लिए क्रम में विपर्यय कर दिया है।

"अपने निजी स्वार्थ के लिए सत्तारूढ़ नेता सारे देश के हित का नीलाम करने को तैयार रहते हैं - क्या कहा जाये, अर्थशास्त्र के इन प्रकांड पंड़ितो को।"[189]

"वाक्य का सामान्य क्रम - "अर्थशास्त्र के इन प्रकांड पंड़ितों को क्या कहा जाये।' किन्तु यहाँ अपने स्वार्थ के लिए देश को बेच रहे सत्ताधारी नेता पर अपना आक्रोश प्रकट करने के लिए पद-क्रम विचलन का प्रयोग किया है।

"पड़ोस धर्म में भाभीजी कभी नहीं चूकती थी। रातभर माता की महिमा सुनती रहीं। सुबह प्रसाद लेकर लौटीं तो चहकती-कुदकती।"[190]

यहाँ 'चहकती-कुदकती' क्रिया विशेषण 'लौटी' क्रिया के पहले आना चाहिए।

"हिटलराना अन्दाज में छात्रों से बात करते करते अपने सहयोगी प्रध्यापकों

को भी नरेन कम हिकारत की नज़र से नहीं देखता है।"[191]

संज्ञा के बाद क्रिया विशेषण आता है, किन्तु यहाँ पहले प्रयोग हुआ है। इसके द्वारा प्राध्यापक के क्रोधी स्वभाव को अभिव्यंजित किया है।

"मिट्टी के कणों तक में भ्रष्टाचार की बू आती है अनसूँधे ही।"[192]

यहाँ 'अनसूँधे ही' पदों का क्रम क्रिया से पहले आना चाहिए। इस पद-क्रम विचलन द्वारा 'भ्रष्टाचार' जैसी विसंगति पर व्यंग्य किया गया है।

4) अन्विति के स्तर पर विचलन

पद-क्रम विचलन की तरह हिन्दी साहित्य में अन्विति भंग के उदाहरण मिलते है। इसमें व्याकरणिक नियमों का उल्लंघन होता है। अहिंदी भाषी पात्र द्वारा व्यंग्य के परिवेश में व्यंजकता लाने के लिए इसका प्रयोग होता है। हिन्दी व्यंग्य निबंधों में प्राय: कहीं-कहीं पर अन्विति स्तर पर विचलन के उदाहरण मिलते है। जैसे -

"मैं आशंका से परेशान हूँ कि जल्दी ही जाँच कमीशनों का नाम खत्म हो जायेगा। मैं घबडा जाता हू।

मैं तब भी घबड़ा जाता हूँ जब सोचता हूँ, ऐसा न हो कि रेडियो पर लता मंगेशकर के गाने बन्द हो जाये।"[193]

'घबरा' शब्द के स्थान पर यहाँ 'घबड़ा' शब्द का प्रयोग हुआ है। ये अन्विति स्तर का विचलन कहलायेगा।

"एक बात मैं बोलती टुमको, के डीवाली मनाना माँगता पर ये क्रेकर्स बहुत डेंजरस होता। कबी-कबी तो क्या होता कि आक्खा बोड़ी जल जाता।"[194]

"तुम इदर कायकू खड़ा है?"

"अप्लीकेशन का जवाब माँगता है सर।"

"ओय, गोवरमेण्ट ने जुवाब नई दिया। इधर आवक में देखो फारवर्ड हुआ कि नई।"[195]

"हो नहीं जानटा, हमकू नहीं जानय..... हम रोमियो, दिलेदिलदार, गुलशनबहार हम आशिक यानि कि लवर..... हमारा बुलबुल उड़ गया..... हम को टाटा कर गया..... हम उसके वास्टे कुर्बान हो गया, उसकी रूह की नजाट के लिए मारा-मारा फिरता।"[196]

"एक बंगाली डाक्टर था जो लड़कियों से जीभ दिखाने के लिए 'टॅग

दिखाओ' कहा करता था। टाँग से उसका अर्थ 'टंग' से होता था। जब एकाध जिद्दी लड़की ने टाँग दिखानी मना कर दी तो वह होनहार इन्सान उसने 'जुबान देखना माँगता' कहने लगा। इत्तफाक की बात कि वह 'जुबान' को 'जोबन' उच्चरित करता था। उसकी "प्रैक्टिस काफी चली। बाद में वह खुद भी कहीं चला गया।"[197]

यहाँ अन्विति के स्तर पर विचलन प्रयोग हास्य युक्त व्यंग्य की पुष्टि करने के लिए हुआ है।

"मम्मी डियर, अपुन लोग साला अक्खा मुमबई घुमेला है। अणे हेमाजी, धरमजी को, देखेला। इकदम कड़क फसक्लास पर्सनालटी आहे! ऐसा माफिक जास्ती फैशन करीता कि अपुन साला बंडल हो गई च!" उनकी माँ बोखला गई कि शायद हम समन्दर किनारे से किसी और के बच्चे उठा लाये हैं। वे अभी पूरी तरह बौखलाने भी न पाई थी कि मंझला बोला - 'एक ठो मस्ती कड़क चाह मारो! अक्खा मूड डाऊन होने को मांगता।"[198]

यहाँ बम्बईयाँ हिन्दी के प्रयोग तथा अन्विति स्तर के विचलन द्वारा युवा वर्ग में फिल्मों तथा फिल्मी कलाकारों के प्रति अतिशय झुकाव को व्यंजित किया गया है।

हिन्दी व्यंग्य निबंध साहित्य में व्यंग्यार्थ को प्रस्तुत करने के लिए अन्विति स्तर के विचलन का प्रयोग हुआ है।

व्यंग्य निबंध में अनअपेक्षित विस्तार को संक्षिप्त करने के लिए विचलन सहायक हुआ है। बहुशब्दीय अभिव्यक्ति को एक शब्दीय स्वरूप में व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है 'विचलन'। व्यंग्य निबंध में इसके प्रयोग से व्यंग्य में प्रहारात्मकता आई है।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

1. भगवानदास एन. कहार, डॉ. सुदर्शन मजीठिया का व्यंग्य शिल्प, पृ-115.
2. हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, पृ-80, शहादत जो टल गई।
3. शरद जोशी, यथासंभव, p-275, 'अब मैं रीतिकाल की ओर लौट रहा हूँ।'
4. वही, पृ-28.
5. श्रीलाल शुक्ल, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ-108, 'छात्रों में अनुशासनहीनता कैसे रोकी जाए?
6. संसारचन्द्र, सोने के दांत, पृ-42, 'समाचार पत्र'.

7. नरेन्द्र कोहली, एक और लाल तिकोन, पृ-23.
8. नरेन्द्र कोहली, जगाने का अपराध, पृ-114.
9 सुदर्शन मजीठिया, इंडिकेट बनाम सिंडीकेट, पृ-84.
10. अमृतराय, विजिट इण्डिया, पृ-120, 'क्विट इण्डिया उर्फ आओ, फोरेन चलें'.
11. नरेन्द्र कोहली, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ-127, 'भगवान की औकात'.
12. सुदर्शन मजीठिया, छींटे, पृ-70.
13. प्रेम जनमेजय, शर्म मुझको मगर क्यों आती? पृ-21, 'धोबी के कुत्ते'.
14. के. पी. सक्सेना, बाजूबंद खुल-खुल जाय, पृ-75.
15. रोशनलाल सुरीरवाला, भिश्ती और भस्मासुर, पृ-11, 'सरकारी खर्च पर दिल्ली आकर मरिए'.
16. बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ्तखोरों से, पृ-48, 'चौबेजी की डायरी'.
17. प्रदीप पंत, पाइवेट सेक्टर का व्यंग्यकार, पृ-105.
18. ज्ञान चतुर्वेदी, दंगे में मुर्गा, पृ-25, 'चरखे की खोज'.
19. हरि जोशी, भेड़ की नियति, पृ-106, 'अ' से अफसर.
20. श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्युलोक में, पृ-51, 'सर्वहारा झोला'.
21. हरिशंकर परसाई, सदाचार का तावीज़, पृ- 13
22. नरेन्द्र कोहली, एक और लाल तिकोन, पृ-52.
23. सूदर्शन मजीठिया, पब्लिक सेक्टर का साँड, पृ-87,
24. वही, डिस्को कल्चर, पृ-170.
25. रोशनलाल सुरीरवाला, मुर्ख शिरोमणी, पृ-69
26. वही, पृ-84.
27. बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ़्तखोरों से, पृ-94, 'हे वोटर भगवान!'
28. के. पी. सक्सेना, मूँछ मूँछ की बात, पृ-65, 'संगीत का पाप उर्फ पाप संगीत'
29. नीरज व्यास, भरे पेट का चिन्तन, पृ-56, 'मूड़ मुड़ाये टिकट मिले'
30. हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, पृ-40, एक दीक्षान्त भाषण
31. संपा. श्रीकमलाप्रसाद, परसाई रचनावली भाग-5, पृ-87.
32. शरद जोशी, यथासंभव, पृ-397, 398 'महँगाई और समाजवाद'
33. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-48. 'जेम्स बोन्ड इलाहाबाद में'

34. सुदर्शन मजीठिया, इक्कीसवीं सदी, पृ-50.
35. शंकर पुणताम्बेकर, 'विजिट यमराज की' पृ-11.
36. सुदर्शन मजीठिया, 'डिस्को कल्चर'. पृ-52.
37. शरद जोशी, यथासंभव, पृ-33, 'बसस्टैंड का भिखारी'
38. शंकर पुणताम्बेकर, कैक्टस के काँटे, पृ-76.
39. श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्यु लोक में, पृ-63, 'जाकी रही भावना जैसी'
40. लतीफ घोंघी, मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएं, पृ-32, 'इक्कीसवी सदी का पाणिग्रहण अधिनियन'.
41. सुदर्शन मजीठिया, टेलीफोन की घण्टी, पृ-71.
42. हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, पृ-23.
43. श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-126, 'राजनीति और रेलगाड़ी पर'
44. संसारचन्द्र, सोने के दाँत, पृ-101, 'जिंजर की बोटल'
45. रोशनलाल सुरीरवाला, ये माँगनेवाले, पृ-26.
46. हरि जोशी, भेड़ की नियती, पृ-61, 'पराया माल अपना'.
47. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी ध्वन्यालोक, भूमिका, पृ-48.
48. शरद जोशी, जीप पर सवार इल्लियाँ, पृ-60.
49. वही, पिछले दिनों, पृ-10, 11.
50. परसाई रचनावली भाग-4, पृ-258. विधायकों की महँगी गरीबी.
51. रवीन्द्रनाथ त्यागी, शोकशभा', पृ-69.
52. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-193, 'शाम हो गयी'.
53. वही, देवदार के पेड़, पृ-2.
54. श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-32, 'भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ'.
55. आत्माराम मिश्र, बात का बतंगड़, पृ-87
56. लतीफ घोंघी, किस्सा दाढ़ी का, पृ-80.
57. वही, बुद्धिजीवी की चप्पलें, पृ-105.
58. वही, चोरी न होने का दुख, पृ-33
59. नरेन्द्र कोहली, आधुनिक लड़की की पीड़ा, पृ-51, 52.
60. वही, जगाने का अपराध, पृ-64, 'वाढ़ का नियत्रण'.

61. केशवचन्द्र वर्मा, अफलातूनो का शहर, पृ-24.
62. अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ-21, 'रेल्वे गेट पर 'एशियाड' की हत्या'
63. शंकर पुणताम्बेकर, शतरंज के खिलाड़ी, पृ-79, 80, 'सराफ की दुकान'.
64. शंकर पुणताम्बेकर, पतनजली, पृ-77, 'नेता ट्रेनिंग सेंटर'.
65. सुदर्शन मजीठिया, छींटे, पृ-12.
66. वही, डिस्को कल्चर, पृ-43.
67. वही, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ-83.
68. प्रेम जनमेजय, राजधानी में गंवार, पृ-138
69. रोशनलाल सुरीरवाला, काट पर हजामत, पृ-35.
70. बरसानेलाल चतुर्वेदी, बुरे फँसे, पृ-35.
71. बालेन्दु शेखर तिवारी, किराएदार साक्षात्कार, पृ-64.
72. के. पी. सक्सेना, मूँछ मूँछ की बात, पृ-50, 51.
73. नीरज व्यास, भरे पेट का चिन्तन, पृ-46, 'पड़ोसी का कुत्ता और कवि'.
74. जगतसिंह बिष्ट, तिरछी नज़र, पृ-60, 'मंत्रीजी से मुलाकात'.
75. विद्यानिवास मिश्र, रीतिविज्ञान, पृ-74.
76. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, संरचनात्म शैलीविज्ञान, पृ-49.
77. वही, पृ-49.
78. भोलानाथ तिवारी, शैलीविज्ञान, पृ-40.
79. भगवानदास कहार, डॉ. सुदर्शन मजीठिया का व्यंग्य शिल्प, पृ-108.
80. हरिशंकर परसाई, विकलांग श्रद्धा का दौर, पृ-42.
81. परसाई रचनावली भाग-4, गाँधीवादी के असत्य के प्रयोग, पृ-158.
82. वही, हारा कांग्रेसी कहाँ जाय?, पृ-391.
83. शरद जोशी, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, पृ-8.
84. वही, जीप पर सवार इल्लियाँ, पृ-19.
85. लतीफ घोंघी, मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ-81, 'एक धार्मिक बस की कथा'.
86. नरेन्द्र कोहली, जगाने का अपराध, 'बोर कथा', पृ-11.
87. सुदर्शन मजीठिया, कुछ इधर की कुछ उधर की, पृ-61.
88. वही, पब्लिक सैक्टर का साँड, पृ-10.
89. प्रेम जनमेजय, राजधानी में गंवार, पृ-148.
90. बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ़्तखोरों से, पृ-97, 'अन्तर्देशीय पत्र,

गोंद और चिपकाना'.
91 मधुसूदन पाटिल, देखन में छोटे लगे, पृ-50, 'नशा अंग्रेजी बोलने का'.
92. संसारचन्द्र, महामूर्ख मण्डल, पृ-13, 'चुनौतियों के बीच'.
93. अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ-68, 'सरकारी अस्तबल के अरबी घोड़े'.
94. वही, पृ-72.
95. विश्वभावन देवलिया, राग यूनियम कार्बाइड, पृ-68, 'ताली बजाओ'.
96. के. पी. सक्सेना, मूँछ मूँछ की बात, पृ-51, 'बात दाढ़ी उत्पादन की'.
97. श्याम सुन्दर घोष, प्रेम करने की उमर, पृ-84, 'आलोचक के नाम व्यंग्यकार का पत्र'.
98. परसाई रचनावली भाग-4, पृ-215, 'जन्नत'.
99. हरिशंकर परसाई, पगदण्डियों का जमाना, पृ-91.
100. वही, विकलांग श्रद्धा का दौर, पृ-31.
101. शरद जोशी, जीप पर सवार इल्लियाँ, पृ-35.
102. शरद जोशी, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, पृ-70, 'कोफी-हाऊस में बैठे चार व्यक्ति'.
103. रवीन्द्रनाथ त्यागी, शोकशभा, पृ-59, 'काले धन का शास्त्रीय विवेचन'.
104. नरेन्द्र कोहली, जगाने का अपराध, पृ-114, 'स्मार्टनेस का मूल्य'.
105. अमृत राय, विजिट इण्डिया, पृ-10, 'चलने से पहले कुछ हिदायतें'.
106. वही, पृ-87, 'बस माने बइस्कोप'.
117. बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ़्तखोरों से, पृ-47, 'चौबेजी की डायरी'.
108. मधुसूदन पाटिल, देखन में छोटे लगें, पृ-50, 'नशा अंग्रेजी बोलने का'.
109. रवीन्द्रनाथ त्यागी, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ- , 'एक फाइल का सफर'.
110. अमृतराय, विजिट इण्डिया, पृ-42, 43, 'मृच्छकटिकम् उर्फ मिट्टी की गाड़ी'.
111 अजातशत्रु, आधीवैतरणी, पृ-75, दूब में कांटे कब उगेंगे'.
112. वही, पृ-161, पाकेटमार का विदाई - समारोह
113. शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-30, 31, 'क्या नहीं होता'.
114. वही, पृ-124, 'ग्रेट मज़ाक'.
115. संसारचन्द्र, बाते ये झूठी है : सेवा करे तो मेवा पावे, दृष्टव्य : श्रेष्ठ हास्य

व्यंग्य निबंध, संपा.-काका हाथरसी, गिरिराज शरण अग्रवाल, पृ-148

116. नीरज व्यास, भरे पेट का चिन्तन, पृ-32, 'मारूती से बाढ़ के दर्शन'.

117. हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, पृ-18.

118. वही, पृ-42, एक दीक्षान्त भाषण.

119. वही, पृ-42.

120. परसाई रचनावली, भाग-4, पृ-175. 'कैण्टीन में विधायक'.

121. वही, पृ-41, 'हास्यास्पद अच्छी बात'.

122. शरद जोशी, यथासंभव, पृ-17, 'भैसन्हि माँह रहत नित बकुला'.

123. वही, पृ-398, 'महँगाई और समाजवाद'.

124. वही, पृ-385, 'चुनाव गीतिका : सरलार्थ'

125. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-248, 'बारिश का एक दिन'.

126. नरेन्द्र कोहली, आत्मा की पवित्रता, पृ-21, 'असभ्य'.

127. शंकर पुणताम्बेकर, शतरंज के खिलाड़ी, पृ-18, 'मेरे नाम लोटरी'.

128. वही, बदनामचा, पृ-41, 'किताब की भूमिका'.

129. सुदर्शन मजीठिया, मुख्यमंत्री का डंडा, पृ-31.

130. वही, पब्लिक सैक्टर का साँड, पृ-102, 'हिन्दू मुस्लिम खाई-खाई'.

131. वही, छींटे, पृ-63.

132. रोशनलाल सुरीरवाला, पत्नी शरणं चच्छामि, पृ-186.

133. संसारचन्द्र, सोने के दाँत, पृ-21, 'शायर'.

134. वही, पृ-29, 'नौकर'.

135. वही, महामूर्ख मण्डल, पृ-78, 79, 'मेरा अपना रेखाचित्र'.

136. अमृतराय, विजिट इण्डिया, पृ-81, 'बस माने बाइस्कोप'.

137. अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ-77, 'हमें एक कटोरा बहस दो !'.

138. वही, पृ-102, 'हे, बेटी, दुर्गावती तुम'.

139. बरसानेलाल चतुर्वेदी, चौबेजी की डायरी, पृ-39, 'सुदामा और कृष्ण एक विद्यालय में कब पढ़ेंगें'.

140. बालेन्दु शेखर तिवारी, फिल्मावलोकन, पृ-47, 'फिल्मावलोकन के फायदे'.

141. बालेन्दु शेखर तिवारी, इक्कीसवीं सदी मे व्यंग्यकार, पृ-25, 'लोग इक्कीसमी

सदी में क्या खाएँगे?'.

142. सूर्यबाला, अजगर न करे चाकरी, पृ-121, 'लौटते हुइ मूसों के बीच कुछ रोमांचक क्षण'

143. मधुसूदन पाटिल, शिकायत है उनसे, पृ-110.

144. मधुसूदन पाटिल, देखने मे छोटे लगें, पृ-19, 'प्रगति की राह पर शहर'.

145. शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-54, 'और वे चले जाते हैं'.

146. शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-104, 'शपथ महिमा'.

147. भरतराम भट्ट, अवसरवादी बनो, पृ-26, 'धरती और स्वर्ग के बीच का फासला'.

148. श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्युलोक में, पृ-114, 'शराफत के आफत'.

149. निरज व्यास, भरे पेट का चिन्तन, पृ-124, 'दुश्मनी! एक ट्रक के लिए'.

150. विश्वेन्द्र महेता, मारने दो हमें छक्का, पृ-11, 'च' से चमचा

151. विश्वमोहन माथुर, क्षमा याचना सहित, पृ-44, 'शादी सेवा'.

152. हरिशंकर परसाई, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृ-134.

153. हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, पृ-49, 'अभिनन्दन'.

154. परसाई रचनावली भाग-4, 'जाँच कमीशन सरकार का कुल्ला', पृ-34.

155. वही, पृ-399, 'धर्मक्षेत्रे कुरक्षेत्रे'.

156. वही, पृ-289, 'अब कृष्णमेनन की याद क्यों'

157. वही, पृ-108, 'तुसी हुकुम करोजी!'

158. शरद जोशी, तुम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, पृ-19, 'वर्जीनिया वुल्फ से सब डरते हैं'.

159. रवीन्द्रनाथ त्यागी, शोक शभा, पृ-81, 'एक बड़े आदमी के बारे में'.

160. श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-19, 'लखनऊ'.

161. नरेन्द्र कोहली, आधुनिक लड़कीकी पीड़ा, पृ-14, 'सन्तों की बिल्लियाँ और चूजे'.

162. शंकर पुणताम्बेकर, बदनामचा, पृ-41, 'किताब की भूमिका'.

163. सुदर्शन मजीठिया, इंडिकेट बनाम सिंडीकेट, पृ-82.

164. प्रेम जनमेजय, मैं नहीं माखन खायो, पृ-19, 'जाना सुदामा का कृष्ण से

होली खेलने'

165. प्रेम जनमेजय, शर्म मुझको मगर क्यों आती?, पृ-15, 'मुझे सी. डी. चाहिए, पापा!'

166. संसारचन्द्र, महामूर्ख मण्डल, पृ-17, 'चुनौतियों के बीच'.

167. संसारचन्द्र, सोने को दाँत, पृ-41, 'समाचार पत्र'.

168. मधुसूदन पाटिल, हम सब एक हैं, पृ-68.

169. श्यामसुन्दर घोष, 'खिन खारा, खिन मीठा' पृ-46, 'मौसम प्रेम पत्रों का'.

170. जगतसिंह बिष्ट, तिरछी नज़र, पृ-76, 'एक और दहेज हत्या'.

171. अलका पाठक, गार्ड रक्षित दफ्तरे, पृ-20, 'दाग ढूंढ़ते हुए'.

172. हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, पृ-19, 'वह जो आदमी है न'.

173. वही, पृ-12.

174. परसाई रचनावली भाग-4, पृ-194, 'हरिजन को पीटने का यज्ञ'.

175. शरद जोशी, जीप पर सवार इल्लियाँ', पृ-97.

176. रवीन्द्रनाथ त्यागी, शोकसभा, पृ-33, 'राष्ट्रीय करण के बाद'.

177. श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-28, 'एक खानदानी नौजवान'.

178. बरसानेलाल चतुर्वेदी, चौबेजी की डायरी, पृ-18, 'किस्से जँवाईलालों के'.

179. विश्वेन्द्र महेता, मारने दो हमे छक्का, पृ-24, 'नारे का नगाड़ा'.

180. हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, पृ-11.

181. वही, अपनी-अपनी बीमारी, पृ-7.

182. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-111, 'एक दिक्षान्त भाषण'.

183. श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-28, 'एक खानदानी नौजवान'.

184. आत्मानन्द मिश्र, बे बात की बात, पृ-46, 'जल्दबाजी'.

185. लतीफ घोंघी, व्यंग्य चरितम्, पृ-16.

186. नरेन्द्र कोहली, आत्मा की पवित्रता, पृ-21, 'असभ्य'.

187. अमृतराय, विजिट इण्डिया, पृ-86, 'बस माने बाइस्कोप'.

188. सुदर्शन मजीठिया, इंडिकेट बनाम सिंडिकेट.

189. वही, मुख्यमंत्री का डंडा, पृ-66.

190 मधुसूदन पाटिल, देखन में छोटे लगे, पृ–75, 'परम आत्मा प्रिय भाभीजी'.
191. शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ–88, 'निकम्मेपन का नशा'.
192. भरतराम भट्ट, अवसरवादी बनो !, पृ–77, 'भ्रष्टाचार का भार'.
193. परसाई रचनावली भाग–4, पृ–52, 'डण्डा और बाँसुरी'.
194. शरद जोशी, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, पृ–28, 'पइसा का गांडेश'.
195. वही, पृ–31, 'सरकार का जादू'.
196. संसारचन्द्र, महामूर्ख मण्डल, पृ–33, 'मुलाकातें'.
197. रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ–125, 'निराशा के क्षण'.
198. के. पी. सक्सेना, मूँच मूँछ की बात, पृ–16, 'बम्बई से लौटे हुए चूजे'.